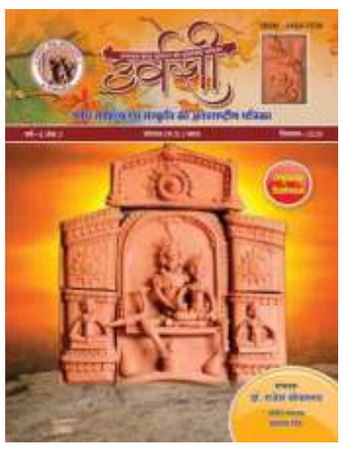

लघुकथा वृत्त
मासिक

RNI-MPHIN/2018/77276

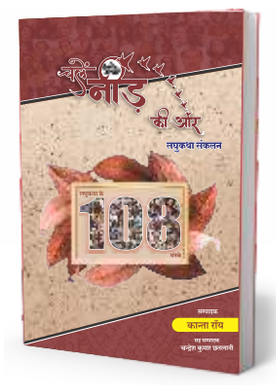

वर्ष : 3 अंक : 10 | भोपाल अक्टूबर, 2020 | पृष्ठ : 8, मूल्य 10 रुपये

हिंदी भवन भोपाल द्वारा आयोजित हिंदी भाषा एवं साहित्य उत्सव शृंखला

लघुकथा में पैनापन आवश्यक : डॉ. हरीश नवल

शिल्पगत विशेषताएं एवं भाषा और मुहावरों का प्रयोग ' विषय पर हुए सेमिनार में देश -विदेश के साहित्यकारों ने भाग लिया।

भोपाल। हमारे सृजन में रोचकता के साथ पाचकता भी होना चाहिए। हमारा शिल्प और शैली कहीं हमारे कथ्य की हत्या न कर दे, इस बाबत लेखक को सचेत रहने की आवश्यकता है। लघुकथा में लेखक को गागर में सागर भरने का महत्वपूर्ण कार्य करना होता है। इसमें पैनापन आवश्यक है।- यह उदगार वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. हरीश नवल, नई दिल्ली ने हिंदी भवन, भोपाल द्वारा आयोजित 'हिंदी भाषा एवम साहित्य उत्सव' में लघुकथा : रचनात्मकता की संभावनाएँ, शिल्पगत विशेषताएं एवं भाषा और मुहावरों का प्रयोग विषय पर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में व्यक्त किए। कार्यक्रम के प्रारम्भ में हिन्दी भवन के निदेशक डॉ. जवाहर कर्नावट ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए वक्ताओं का स्वागत किया।

लघुकथा केंद्रित इस महत्वपूर्ण आयोजन में वरिष्ठ रचनाकार डॉ. अशोक भाटिया करनाल (हरियाणा) ने कहा कि –

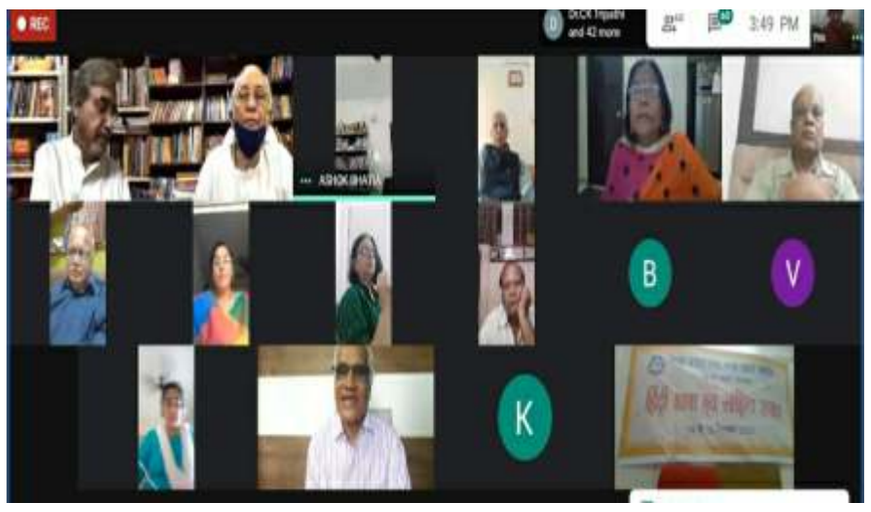

भारतीय लघुकथा का वर्तमान स्वरूप भारतीय परंपरा से विकसित हुआ है। लघुकथा अभी तक अपनी अपेक्षित भूमिका का निर्वहन नहीं कर पाई है। हमारे लघुकथा लेखकों को पौराणिक और ऐतिहासिक प्रसंगों को लेकर लघुकथाओं का सृजन करना चाहिए। इस महत्वपूर्ण आयोजन में भाग लेते हुए वरिष्ठ साहित्यकार और आलोचक प्रो. बी.एल.आच्छा (चैन्ने) ने कहा कि– लघुकथा की भूमि बड़ी व्यापक है। भावनात्मकता के स्थान पर लघुकथा में अपने समय का सत्य उदघाटित होना चाहिए।

आज रचना के माध्यम से आलोचना की बात करना बहुत आवश्यक है। वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यकांत नागर, इंदौर ने कहा कि– लघुकथा विधा हिंदी साहित्य का महत्पूर्ण अंग है। प्रगति करना है तो बंधे हुए मार्गों को छोड़ प्रयोगात्मकता का मार्ग चुनना होगा। घटित को ज्यों का त्यों लिख देना लघुकथा नहीं। सृजन के लिए श्रम व धैर्य की आवश्यकता है । इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार और आलोचक बलराम ने कहा कि– यह लघुकथा का समय है। लघुकथा में कविता प्रवेश कर रही है। अच्छी लघुकथा को काव्य कथा जैसी होना चाहिए परन्तु यह अनिवार्य नहीं। काव्य तत्व से लघुकथा में अतिरिक्त आभा आती है । कार्यक्रम में मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री संचालक, कैलाशचंद्र पंत विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में हिन्दी भवन के न्यासी डॉ. सुरेंद्र बिहारी गोस्वामी ने सभी उपस्थितजनों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती कांता राय ने किया।

शोध साहित्य एवं संस्कृति की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका उर्वशी का लोकार्पण सम्पन्न

भोपाल। रामायण केंद्र भोपाल (भारत) की प्रतिनिधि पत्रिका 'उर्वशी' के लघुकथा विशेषांक का गत दिवस 'ऑन–लाइन' लोकार्पण सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार श्री राज हीरामन (मॉरीशस) ने की तथा मुख्यातिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार श्री सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नॉर्वे) विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार लघुकथा लेखक आलोचक डॉ. अशोक भाटिया, करनाल (हरियाणा) एवम वरिष्ठ लघुकथा लेखक डॉ. बलराम अग्रवाल (दिल्ली) उपस्थित थे। इस आयोजन में पत्रिका का मुखपृष्ठ चित्रित करने वाले वरिष्ठ शिल्पकार एवम चित्रकार श्री राजीव नाफड़े (होशंगाबाद) भी विशेष रूप से मंच पर उपस्थित थे। कार्यक्रम की संयोजक और इस विशेषांक की अतिथि सम्पादक वरिष्ठ लघुकथाकार श्रीमती कांता राय ने सर्वप्रथम समूचे कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए मंचस्थ अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इस लघुकथा विशेषांक में लघुकथा विधा के सवा सौ साल का समाज और उसका अंतर्द्वंद्व शामिल है मैं इस लघुकथा विशेषांक के लिए अतिथि सम्पादक के लिए अवसर देने हेतु पत्रिका के सम्पादक डॉ. राजेश श्रीवास्तव की कृतज्ञ हूँ । इसके पश्चात मंचस्थ अतिथियों ने 'उर्वशी' के लघुकथा विशेषांक का लोकार्पण किया ।

लोकार्पण अवसर पर उर्वशी पत्रिका के सम्पादक

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. राजेश श्रीवास्तव ने मंच पर उपस्थित सभी अग्रज साहित्य मनीषियों का स्वागत करते हुए लघुकथा 'उर्वशी' पत्रिका के इस लघुकथा विशेषांक की प्रकाशन योजना एवम उसके क्रियान्वयन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि –'किसी कथा का सिर्फ लघु होना ही लघुकथा नहीं है, लघु और कथा दोनों अलग अलग शब्द हैं कथा में लघुता होना भी लघुकथा नहीं है जैसे छोटा औजार और बड़ा औजार जहां जिस औजार की ज़रूरत होगी उसी से वह काम सम्पन्न होगा । हमारे पौराणिक ग्रन्थों रामायण आदि में लघुकथाएं और उनके पात्र भरे पड़े हैं जिनका आज भी सदियों पश्चात हमारे जनजीवन पर गहरा प्रभाव है। वर्तमान लघुकथा समय और आवश्यकतानुसार परिष्कृत रूप में हमारे सम्मुख है निश्चित ही लघुकथा साहित्य में 'उर्वशी' का यह लघुकथा विशेषांक मील का पत्थर साबित होगा।

'उर्वशी' के इस विशेषांक की समीक्षा वरिष्ठ साहित्यकार और समीक्षक श्री गोकुल सोनी ने करते हुए कहा कि – उर्वशी' पत्रिका के लघुकथा विशेषांक से गुजरना जैसे एक सुंदर उपवन से गुजरना है जिसमें देशी गेंदा, गुलाब, जूही, चंपा, चमेली तो हैं ही विदेशी आर्केड, कारनेशन, ट्यूलिप भी महक रहे हैं यानी मंद पुरवाई के साथ पछुआ हवा का आनन्द भी इस अंक में देश विदेश के चुने हुए लघुकथाकारों की श्रेष्ठ लघुकथाओं का प्रकाशन एवम अग्रज लघुकथाकारों द्वारा विधा केंद्रित महत्वपूर्ण आलेख इस अंक को पठनीय ही नहीं अपितु संग्रहनीय भी बनाते हैं। सोनी जी ने संग्रह की एक–एक लघुकथा के शिल्प एवम कथ्य पर सूक्ष्मता दृष्टि डालते हुए अपनी बात रखी। इसी क्रम में इस अंक पर दूसरे समीक्षक श्री घनश्याम मैथिल 'अमृत' ने अपनी बात रखते हुए कहा कि– उर्वशी के इस महत्वपूर्ण लघुकथा विशेषांक में सन 1901 से 2020 यानी लगभग 120 वर्षों की तीन पीढ़ियों की लघुकथाओं को सम्मिलित किया गया है ।

शेष पृष्ठ–2

सम्पादकीय

चित्र आधारित लेखन : कितना सही?

स्वयंस्फूर्त कोई भी कार्य नहीं हुआ करता है। हर बात के होने के पीछे वजहें होती है। लघुकथा ही नहीं बल्कि हर विधा, हर कार्य के होने के पीछे प्रेरक की अहम भूमिका होती है। जब तक कोई बात, कोई घटना, कोई चित्र, मन को उद्वेलित ना करें, चिंतन के लिए ना उकसाए, तब तक किसी भी कार्य के लिए व्यक्ति प्रेरित नहीं हो सकता है, वह आगे नहीं बढ़ सकता है। बिना किसी प्रेरणा के, अपने आप कथ्य का मन में कौंधना और लघुकथा लिख लेना संभव नहीं। बाहरी घटनाक्रम, दृश्य या चित्र से ही व्यक्ति की सोच में आतंरिक परिवर्तन होने की सम्भावना बनती है।

हम सब जानते हैं कि वर्तमान समाज में मानव बुद्धि भौतिक साधनों द्वारा यांत्रिक बन चुकी है। वह बाह्य रूप में जो देखती है, उसी के बारे में सोचती है। और ये सोचना तभी सार्थक होगा जब सोच में, चिंतन में, वो समर्थवान होगा।

लेखक अक्सर भोगे हुए पल को, जीवन के यथार्थ को अपनी रचना के माध्यम से उद्धृत करता है। हमारा भोगा हुआ पल कैसा भी हो सकता है, चाहे स्वयं पर गुजरे या हमारे अपनों पर गुजरी हो या देखी–सुनी हुई। इंसान दैनिक जीवन में पल–प्रतिपल अच्छे–बुरे अनुभवों से गुजरता रहता है। अवचेतन मन में अच्छे–बुरे अनुभव डाटा बनकर अलग–अलग खानों में जाकर जमा हो जाते हैं और महीनों, बरसों बाद, जैसे ही इससे जुड़ी कोई घटना या विषय या चित्र, आँखों के सामने से गुजरता है जेहन में एकदम से उस चित्र से जुड़ी बातें कौंध जाती है। जैसे कि आप अपने मित्र से मिलते है, हाल–समाचार पूछते हैं, और जब वह महंगाई पर बात करने लगता है, सीमित वेतन में पूरा महीना काटने की जद्दोजहद, उलझन आपसे बांटता है तो, उस वक्त अचानक आपको अपनी आर्थिक तंगी से जुड़ी हुई तकलीफें भी याद आने लगती है। आपके जेहन में उससे जुड़ी समस्याएं हठात सामने आने लगेंगी। उसी वक्त संभावना बनने लगती है नव सृजन की। जिस प्रकार कौंध रूपी चिंतन, मित्र रुपी बाहरी व्यक्ति के संपर्क में आने से जागती है, ठीक उसी प्रकार हमारे मन–मस्तिष्क को, विषय या चित्र को देखने, पढ़ने के पश्चात भी कथ्य रूपी कौंध की प्राप्ति होती है।

किसी भी विषय अथवा चित्र को देखने के पश्चात अनुभवों के आधार पर दिमाग सोचने लगता है। विषय सन्दर्भ में चिंतन में अन्दर परिवर्तन लाने लगता है। इसका असर मनोवैज्ञानिक ढंग से होता है। निर्माण की प्रवृत्तियाँ आरम्भ होने लगती है। इन चिन्तनों का क्रियात्मक उपयोग लघुकथा में कथ्य को उभरने के लिए कर लेना, लघुकथाकार की कौशलता है। इस तरह से हम पातें हैं कि चेतना उत्पन्न होने के पीछे किसी ना किसी रूप में प्रेरक वस्तुएं कारण होती है।

– कान्ता रॉय

लघुकथा में विस्तार को नहीं विचार को प्रधानता दें –कांता राय

भोपाल। लघुकथा का तेवर कलेवर कथा–कहानी से सर्वथा भिन्न है, लघुकथा लेखन में विस्तार को नहीं विचार को प्रमुखता से उभारना आवश्यक है, लघुकला लिखने में जल्दबाजी न करें लघुकथा लिखने से पूर्व वरिष्ठ लघुकथाकारों की रचनाओं को पढ़ना बहुत आवश्यक है, इससे हमें लघुकथा की बनावट और बुनावट को समझने का अवसर मिलता है।- यह उदगार हैं वरिष्ठ लघुकथाकार और निदेशक लघुकथा शोध केंद्र भोपाल की निदेशक कांता राय के वे राष्ट्रीय शिखर साहित्य संगम द्वारा आयोजित ऑन–लाइन लघुकथा गोष्ठी के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार प्रकट कर रही थी ।

लघुकथा गोष्ठी का संचालन मंच के संयोजक अशोक गौतम 'घायल' ने किया। इस लघुकथा गोष्ठी में समसामयिक वैश्विक महामारी कोरोना से उपजे मजदूरों के दर्द यानी पलायन विषय पर देश भर के डेढ़ दर्जन लघुकथाकारों ने अपनी उत्कृष्ट लघुकथाएं प्रस्तुत की जिनमें प्रमुख थे–निहालचंद शिवहरे (झांसी), इंद्राणी साहू (भाटापारा), प्रो0 अनिता जठार (पुणे), डॉ. अनीता जायसवाल (भंडारा), सुवर्णा जाधव (मुंबई), रागिनी मित्तल (कटनी), रामलाल साहू बेकस (ग्वालियर), जया आर्य, सन्तोष श्रीवास्तव, राजकुमारी चौकसे, सुनीता प्रकाश, आरती सिंह, शेफालिका श्रीवास्तव, सतीश चंद्र श्रीवास्तव, मधुलिका श्रीवास्तव, घनश्याम मैथिल 'अमृत' कार्यक्रम की अध्यक्षता की वरिष्ठ लघुकथाकर अशोक धमेंनिया और अंत में मंच की और से अनीता जी ने सभी उपस्थित जनों का आभार प्रकट किया ।

लघुकथा के प्रति समर्पित

इन्दौर। इंदौर की संस्था 'क्षितिज' द्वारा, देश–विदेश के प्रसिद्ध लघुकथाकारों द्वारा, इस आपदा के समय को रेखांकित करती लघुकथाओं को 'कोरोनाकालीन लघुकथाएँ' के रुप में प्रस्तुत किया गया है। जिसका सम्पादन सतीश राठी जी ने किया है और आकल्पन एवं संयोजन अंतरा करवड़े ने किया. लोकार्पण एक आभासी कार्यक्रम के द्वारा गूगल मीट पर किया गया जिसमें कई दिग्गज साहित्यकारों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। जिन 16 लघुकथाकारों ने उपनी रचनाएँ प्रेषित कीं, उनके नाम हैं – बलराम अग्रवाल, दीपक मशाल, दिव्या राकेश शर्मा, डॉ. रामनिवास मानव, डॉ. संध्या तिवारी, डॉ. शील कौशिक, डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति, डॉ. उमेश महादोषी, जगदीश राय कुलरियां, जया आर्य, माधव नागदा, मृणाल आशुतोष, पवन शर्मा, राजेन्द्र वामन काटदरे, सविता इन्द्र गुप्ता और सीमा भाटिया. पाठकों की जानकारी के लिए बताना उचित है कि लघुकथाओं का यह संकलन 'क्षितिज' द्वारा आपके लिए निःशुल्क उपलब्ध करवाया गया है.

सुपेकर ने विधागत वैशिष्ट्य को बरकरार रखा–डॉ. शर्मा

उज्जैन। सन्तोष सुपेकर ने लघुकथा लेखन में विधागत वैशिष्ट्य और अभिव्यक्ति की ताजगी को बरकरार रखा है, उनकी लघुकथाएं हमारी संवेदनाओं और अनुभवों की दुनिया को विस्तार देतीं हैं। अपने आसपास की घटनाओं और विसंगतियों पर उनकी तीव्र दृष्टि अलक्षित को भी लक्षित बना देती है। – उक्त विचार संस्था सरल काव्यांजलि द्वारा आयोजित लघुकथा संग्रह सांतवे पन्ने की खबर के विमोचन समारोह में विक्रम विश्वविद्यालय के कुलानुशासक, ख्यात समालोचक, डॉ. शैलेंद्रकुमार शर्मा ने व्यक्त किये। जानकारी देते हुए संस्था महासचिव श्री राजेन्द्र देवधरे दर्पण ने बताया कि अत्यंत सीमित स्वरूप में आयोजित इस कार्यक्रम में पुस्तक विमोचन के पश्चात श्री सुपेकर ने अपने उद्बोधन में सहज, संक्षेप में कही गई स्वाभाविक अभिव्यक्ति, लघुकथा, को सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता तीक्ष्णता और गूढ़ता का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि लघुकथा एक आंदोलन है जो व्यवस्था को बदलने की पुरजोर क्षमता रखता है। इस अवसर पर श्री सुपेकर ने संग्रह में से अपनी तीन प्रतिनिधि लघुकथाओं का पाठ किया। पुस्तक चर्चा करते हुए वरिष्ठ लेखक डॉ. देवेंद्र जोशी ने कहा कि सुपेकर की लघुकथाओं से गुजरना अपने समय के मध्यमवर्गीय सच से साक्षात्कार करना है।

शेष पृष्ठ–3

हिंदी दिवस पर सम्मान

सूर्यकान्त नागर, कांता रॉय और सतीश राठी को सारस्वत सम्मान

उज्जैन। अमर शहीदों के चारण राष्ट्रकवि श्रीयुत श्रीकृष्ण सरल जी की स्मृति में पिछले सोलह वर्षों से सक्रिय संस्था 'सरल काव्यांजलि' ने इस हिंदी दिवस पर लघुकथा विधा के तीन महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों को सम्मानित किया है। जानकारी देते हुए संस्था के सचिव डॉ. संजय नागर ने बताया कि 14 सितम्बर को वरिष्ठ लघुकथाकार श्री सूर्यकांत नागर, श्री सतीश राठी (इंदौर) और श्रीमती कांता रॉय (भोपाल) को मध्यप्रदेश में लघुकथा की परिधि को विस्तारित करने और हाशिये की विधा को मुख्य धारा में लाने के लिए लगातार असीमित प्रयास करने हेतु सारस्वत सम्मान से अलंकृत किया गया है।

डॉ. संजय नागर

लघुकथा शोध केंद्र, दिल्ली शाखा की सितम्बर'२० की गोष्ठी

लघुकथा शोध केंद्र, भोपाल की दिल्ली शाखा की सितम्बर माह की गोष्ठी 20 तारीख को संपन्न हुई। ज्ञात हो कि कोविड महामारी के चलते मासिक लघुकथा गोष्ठी का परिचालन पिछले छः महीनों से ऑनलाइन ही हो रहा है। विगत कुछ महीनों से ऑनलाइन होने वाली गोष्ठी में प्रतिभागियों का उत्साह देखते ही बनता है। इस बार भी घोषणा होने के बाद बहुत कम समय में सभी 25 प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभागिता की सूचना पटल पर दे दी थी। पिछले माह की गोष्ठी में जहाँ प्रतिभागियों ने गूगल मीट पर कथा वाचन किया वहीं इस माह सभी ने 'ऑनलाइन लघुकथा गोष्ठी' पटल पर लिखित रूप में अपनी लघुकथाएं प्रेषित कीं। यह गोष्ठी रविवार, 20 सितम्बर- 2020 को तकनीक का लाभ उठाते हुए श्रीमती अंजू खरबंदा के कुशल नेतृत्व तथा कार्यकारिणी सदस्य श्री सतीश खनगवाल व श्रीमती रेणुका सिंह के सहयोग से प्रभावशाली ढंग से संपन्न हुई। गोष्ठी में कुल 25 प्रतिभागियों ने अपनी लघुकथाएं पोस्ट कीं। सभी 25 लघुकथाओं को समीक्षा के लिए 5-5 के क्रम से सर्वश्री अशोक वर्मा जी, अशोक लव जी, सुरेन्द्र कुमार अरोड़ा जी, मनोज धीमान जी तथा मृणाल आशुतोष जी को भेजा गया तथा उनके द्वारा की गई समीक्षा को 22 सितम्बर की शाम पटल पर साझा किया गया।

मंच का सञ्चालन श्री रमेश सेठी ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ट साहित्यकार श्रीमती विभा रश्मि तथा श्रीमती चंद्रा सायता मंच पर उपस्थित रहीं। हर माह की तरह इस बार भी सभी लघुकथाकारों ने अपनी एक से बढ़ कर एक रचनाएँ पोस्ट कीं। आयोजन पूर्णरूपेण अनुशासनबद्ध था। गोष्ठी के मध्य कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती रेणुका सिंह ने अपने सधे हुए अंदाज़ में लघुकथाकारों का उत्साहवर्धन किया। अंत में सतीश खनगवाल जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया और अत्यंत सुचारू रूप से चली यह गोष्ठी नियत समय पर संपन्न हो गई थी। कार्यकारिणी के अथक प्रयासों, आपसी ताल-मेल, कुशल संचाल सभी प्रतिभागियों की अनुशासनबद्धता और लघुकथा के प्रति रूचि तथा लगन के फलस्वरूप 2 घंटे चलने वाला यह आयोजन लघुकथा शोध केंद्र, दिल्ली शाखा की सफलता का एक नया अध्याय लिख गया; जिसका श्रेय अंजू खरबंदा तथा उनके नेतृत्व को जाता है

सदानंद कवीश्वर

लघुकथा शोध केंद्र लखनऊ शाखा की मासिक गोष्ठी

लखनऊ लघुकथा शोध केंद्र, संयोजक अर्पणा गुप्ता, निदेशक, कांता राय के अंतर्गत होने वाली गोष्ठी ऑनलाइन 15/9/20 मंगलवार को सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस गोष्ठी में इरा जौहरी, तनु श्रीवास्तव, शिल्पी त्रिवेदी, सरोज बाला सोनी, सुषमा गुप्ता, रजनी गुप्ता, विजय कुमारी मौर्या, संजीव आहूजा, सुधा आदेश, आलोक मिश्र मुकुंद, ज्योत्सना सिंह, पुष्पा गुप्ता, उपमा आर्य, विजयलक्ष्मी शर्मा, महक, आभा अदीब राजदान, रत्ना बापुली ने अपनी लघुकथाएं मंच पर प्रेषित की। वरिष्ठ साहित्यकार ओम नीरव एवं श्याम गुप्त ने अपने विचार व्यक्त किए और मंच पर सभी कथाओं की विस्तार से समीक्षा करते हुए उद्बोधन दिया।

अधूरे सुनहरे सपने

– निहाल चन्द्र शिवहरे

भागीरथ का मन आज गहरे अवसाद में डूबा था। रह रहकर उसे अपने बेटे कमल के मोबाइल पर कहे शब्द याद आ रहे थे – बापू, मैंनें अपनी सहपाठी लड़की को विवाह के लिए पसंद कर लिया है जो एक विदेश में रहने वाले भारतीय व्यवसायी की बेटी है। उसके पिता ने भी मुझे पसंद कर लिया है तथा उनकी शर्त के अनुसार विदेश में ही खास मेहमानों की उपस्थिति में आगामी माह में शादी सम्पन्न की जायेगी और मुझे उनके कारोबार को देखने के लिए विदेश में ही रहना होगा। समय मिलने पर में बहू के साथ आप सभी से मिलने जरूर आऊँगा । मुझे अपना आशीर्वाद दें।

भागीरथ निर्णय नहीं ले पा रहा था कि वह अपनी पत्नी को कैसे बताये कि जिस पुत्र को हमने मेहनत मजदूरी कर नाजों से पालकर इस योग्य बनाया था उसने ही हमारे सुनहरे सपनों पर तुषारापात कर दिया है।

पुस्तक प्राप्त करने हेतु
खातेदार का नाम : अपना प्रकाशन
बैंक का नाम : ओरियंटल बैंक ऑफ कामर्स
खाता नं. : 04041012000248
आईएफएससी कोड : ORBC0100404

पुस्तक : चलें नीड़ की ओर
पृष्ठ सं. : 300
बाईडिंग : हार्डबाउंड
मूल्य : 565.00 (डाक खर्च सहित)

पृष्ठ-1 का शेष...

शोध साहित्य एवं संस्कृति की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका उर्वशी का लोकार्पण सम्पन्न

इस विशेषांक में हिंदी के साथ ही बांग्ला, पंजाबी, भोजपुरी भाषाओं की महत्वपूर्ण लघुकथाएं भी पढ़ने को मिलती हैं, इसके साथ ही वरिष्ठ अग्रजों के साथ लघुकथा विदेशों से के अंतर्गत खलील जिब्रान, ब्रेख्त, मंटो, ओ हेनरी की महत्वपूर्ण लघुकथाएं भी पाठकों को पढ़ने को मिलती हैं साथ ही इन लघुकथाओं के साथ लेखकों के ई-मेल, मोबाइल नम्बर और डाक का पता प्राप्त होना भी इस अंक की उपलब्धि है ।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ लघुकथाकार डॉ. बलराम अग्रवाल ने कहा कि-दिवंगत लघुकथाकार अग्रजों को याद करना नई पीढ़ी का फर्ज है हमारे पूर्वजों का स्मरण यानी अपनी जड़ों को याद रखना, जड़ों को पूजना हमारी संस्कृति है, जो समाज अपनी ज़मीन अपनी जड़ों से विलग हुआ उसका पतन निश्चित है, उर्वशी हमारी संस्कृति की प्रतीक है। हमें समाजोन्मुखी सृजन करना चाहिए, आत्मकेंद्रित होकर लिखना क्षम्य नहीं है ।

कार्यक्रम में अपने उदगार व्यक्त करते हुए वरिष्ठ लघुकथा लेखक आलोचक डॉ. अशोक भाटिया ने कहा कि- उर्वशी जैसे विशेषांक देश के अलग अलग जगहों से भी प्रकाशित होने चाहिए इससे क्षेत्र विशेष की श्रेष्ठ रचनाधर्मिता राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाश में आती है। लघुकथाकारों को आलोचना समीक्षा के क्षेत्र में भी काम करना चाहिए, नए लेखक पुराने रचनाकारों को पढ़ें, अपनी जड़ों अपनी परम्पराओं को पहचाने जाने तथा उसे महत्व दें, इससे हमारी सोच और संवेदना समृद्ध होगी। रामायण महाभारत हमारे आधार ग्रन्थ हैं इनकी कथाओं और पात्रों को लेकर नवीन सन्दर्भों में लघुकथाएं लिखें। रचना केवल कथा प्रसंग नहीं है रचना में व्यंग्य काव्यात्मकता, का होना ज़रूरी है इससे पाठक की चेतना संवेदना के द्वार पर दस्तक होती है ।

इस अवसर पर नॉर्वे से उपस्थित वरिष्ठ साहित्यकार और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने कहा कि -निश्चित ही उर्वशी का यह लघुकथा विशेषांक अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे पुस्तक रूप में पाठकों के सम्मुख आना चाहिए, जहां हम पुराने अग्रज रचनाकारों को पढ़ें और उन्हें महत्व दें वहीं हमें नई पीढ़ी के रचनाकारों को भी ध्यान से पढ़ना चाहिए यानी नई और पुरानी पीढ़ी के बीच अध्ययन के एक सुदृढ़ सेतु की आवश्यकता है। आज के आलोचक अपना काम पूरी ईमानदारी से नहीं करते, यह चेहरा देखकर अपनी बात करते हैं यह साहित्य के लिए बहुत अच्छा नहीं, उन्होंने इस अवसर पर साहित्य के माध्यम से भारत और नॉर्वे को जोड़ने की बात कही और कई महत्पूर्ण संस्मरण भी सुनाए ।

कार्यक्रम में पत्रिका के मुखपृष्ठ को चित्रित करने वाले चित्रकार श्री राजीव नाफड़े ने भी इस अवसर पर अपने हृदय के उदगार व्यक्त करते हुए उर्वशी के अंक की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आयोजन में मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति हिंदी भवन भोपाल के निदेशक वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. जवाहर कर्नावट ने भी अपने उदगार व्यक्त करते हुए उर्वशी के इस अंक को लघुकथा विधा के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि बताते हुए इसके सम्पादक मंडल को बधाई देते हुए निरन्तर समर्पण भाव से काम करने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार श्री राज हीरामन ने कहा कि 'उर्वशी' पत्रिका का यह लघुकथा विशेषांक ऐतिहासिक है। इस अंक के प्रकाशन से लघुकथा विधा समृद्ध हुई है। रचनाएं एकत्रित कर उन्हें प्रकाशित कर देना ही सम्पादन नहीं है बल्कि उसमें चयन और सुधार भी करना सम्पादकीय श्रम और कौशल का कार्य है जो इस विशेषांक में दिखाई देता है जब भी लघुकथा की बात चलेगी यह लघुकथा विशेषांक याद किया जाएगा। कार्यक्रम के अंत में पत्रिका के प्रबंध सम्पादक डॉ. दिनेश श्रीवास्तव ने सभी उपस्थित जनों का आभार प्रकट किया ।

लघुकथा शोध केंद्र, महेश्वर से निमाड़ी लघुकथाएँ

संपत

मनीष कुमार पाटीदार

संपत आपणा घर की दाळ रोटी जसी तसी खाइ खड धमचाक रयतो थो। माय - बाप की सेवा भी सरवण सयी करतो थो। एखी ओखी वात भी कदी नी करतो थो। गांव की चौपाल पड बठतो भी थो तो बुरियाड़ा डोकरा नडखी सौबत मड। ज्हां ओखो सबयी खोब मान बढ़ावता था। भणेल पांचवीं पास थो पण बड़ा - बड़ा आफसर लोग सी असी वात करतो थो, जसो खोब भणेल लिखेल होय। गांव मड ओखी होसियारी, अच्छयी नडखी वात नी होय असो हुइ नी सकतो थो। संपत थो तो किरसाण पण ओखो जीवणड को अंदाज बड़ो निराळो थो। एक बार पड़ोसी राम्या सी जमीन पर सी छोटी सी वात पड बोलचाल हुइ गई थी। झगड़ो नी बड़ड़ एखा लेण उनड भाईचारा सी मन मारतड राम्या खड खेत की मेर सी निकळनड को रस्तो दयी दियो, कि हाव आपणुज पड़ोसी आय। जमीन काइ उप्पर सी कागत पड लिखयी नड थोड़ी लाया कोई। राम्यो सरम मड पड़यो पण संपत खड फरक नी पड़्यो।

दीवाळी का तिवार खड दसेक रोज बाकी था। पड़ोसी राम्यो परेस्याण थो कि अबकेर घर मड कसी दीवाळी मनावांगा। रुपयो टक्को तो कयी रयो नी। दोइ छोरा नडखी कॉलेज फीस, दवयी बीज भात, ब्याव मावसर मड सब खुटी गया था। राम्या की परेस्याणी सम्पत खड पतो चली तो झट सी ओखा हाथ मड सौ - सौ का दस नोट रखी दिया आनड दिलेरी सी कयो - राम्या जीवन आय चलतो रयज, जब थारा पास आइ जाय तवंड पछा दयी दीजे। राम्यो भोत सरम करनड लगयो। भाई संपत तु इंसान नी भगवान आय जो जररत मड सबका काम आइ जाय्जड।

संपत का बारा मड तेखड मालम थो कि उ थोड़ा दिन को आरु महीमान छे। ओखा गुरदा सड़ी गया था। डॉक्टर नड कयी दियो थो जतपत छः सात मयीना आरु फिर...संपत राम्या खड रुपया दयी खड घर पोयतो हुइ गयो।

नवा चंपकऽ

राजकुमार अत्रे

याणी महीसी राम्या का य्हां सी गऽगाणऽ की आवाज आई रही थी आग लगीं आग लगी। आजू बाजू का सबईजण उनी आग कऽ बुझावण मऽ हैराण। राम्या का घर मऽ गंज का मनुष एक्ठा हुई गया, काई नाना, मोठा बाळक डोकरा डोकरी, पाय धरनऽ की जगा नी।राम्या की वऽऊ कला भी नानी सी बाल्टी एक हाथ मऽ अनऽ एक हाथ सी अपणी साड़ी कऽ अध्धर उठई नऽ छम्म छम्म करती पाणी लई नऽ उनी आग पऽ नाखी रईज।

बगल की श्याणीमाय नऽ कला का नवा चंपक देख्या नऽ कला सी पुछ्यो कवो लाड़ी नवाचंपक कवऽ मोल आण्या। कला नऽ श्याणी माय कऽ देख्यो नऽ कयो परुका दिन जतरा देखणऽ खरगुण गया था तऽव तमारा छोरा नऽ लाई दिया। पण माय तू दिन भरी बान्ना मऽ बठी रयज तूनऽ म्हारा नवाचंपक नी देख्या। माय तू म्हंरा नवा चंपक पैलऽज देखी लेती तो हाऊ ई बळतो तो नऽई बाळती।

मशीन नड को संसार

सविता उपाध्याय 'सरिता'

- हड़का तोड़ मईनत करी करी नड पाटा ढीला हुई गया। अव हमरा मड वा पयल जसी ताकत नी रई।

- पयल मण भर खाणु, न छक सी काम करनू। पण आव अपनी कई वखत नई रई। आन अपना लायक काम बी काँ रयो।

- अवं तो मालिक बी नी हाथ फेरतो, नी परेम सी चारो मडावतो। कालू नाव का बैलिया नड भूरिया नाव का बैलिया खड कयो...

भूरिया:- एतरी देख रेख तो करज करसन दादी। आरू तख काई चईजे?

कालू :- पयल अंधारड अंधारड सी मालिक चारो पूलो डाली दितो थो। अव तो झाँकण तक नी आवतो!

अण ठण्ड मड घी आलसी मिलइ न खाण ख मिल, हाट बाजार का दिन हरो चारो पालो, न लोण बी चाटण कह मिली जातो थो।

केतरा स्वाद सी खाता था हम, पण अब...

अरु एक वात तो हाऊ भूलीज गो कि हम रोज खेत नड मड भी जाता था तो पाय मोकळा हुई जाता था। अव बस खुटा सी बंधी रहो।

भूरियो बैईल :- हाँ भाई, थारी या वात तो सच्चि छे।

कालू:- सुण दशरायो नड दिवाली पर केतरा सजावता था, फिर मालिक हमारी पूजा करता था, केतरो आंनद आवतो थो! यो सब अवँ काँ छे....

भूरिया :- हाँ! पयल पड़वा की रेस बी तो कराडता था! सबई साथ मड दौड़ लगाउता था। केतरो अच्छो लगतो थो, मजो आई जातो थो। आणं अव तो जीवन नीरस हुई गयो। कई उत्सव, नी कई उत्साह ...

कालू :- अव आसी जिनगी कसी काटणु? पयल जो खेती बाड़ी को काम हम उरकवता था। उ सबइ अवं मशीन नड सी होण लगी गो।

हम ठाय का बेकार हुई गया। वरसुदियो रुखों सुखो जो मडई दे उ सई, कई दिन सुकी सकरान भी हुई जाय, पण मालिक देखन तक नई आवतो।

भूरा :- मशीन नड का संसार मड अव हमरो काई काम !

कालू:- चलो, अपण भी दूसरा जानवर नड जसा जंगल मड रव्हागा ।

फिर भूरियो नड कालियो दुइ बैलिया एक दूसरा ख इसारो करज नड पूरी ताकत सी रस्सी तोड़ नड जंगल मड भागी जायज...।

हिंदी लघुकथा-समीक्षा: दशा और दिशा

हिंदी लघुकथा की शुरुआत 1970 के आसपास से मानी जाये, तब भी एक विधा के रूप में यह जीवन का अर्धशतक पूरा कर चुकी है। इस दौरान इसने अपने रूप सौन्दर्य में काफी परिवर्तन- परिमार्जन किया है। संवेदना और शिल्प के स्तर पर नये-नये प्रयोग किये गये हैं और किये जा रहे हैं। हजारों रचनाएं लिखी गई हैं, सैकड़ों संग्रह और संकलन प्रकाशित हुये हैं, अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने लघुकथा- विशेषांक निकाले हैं; तो लघुकथा गोष्ठियों, प्रदर्शनियों आदि के माध्यम से भी इस पर खूब चर्चा-परिचर्चाएं हुईं हैं। बावजूद इसके हिंदी के आलोचकों-समालोचकों ने गंभीरता से लघुकथा पर लिखना उचित नहीं समझा है। अब आप इसे उनकी उदासीनता कह सकते हैं अथवा उपेक्षा; परन्तु वजह यही है कि हिंदी लघुकथा की आलोचनात्मक पुस्तकों का अभाव बना हुआ है।

ऐसा नहीं है कि इस क्षेत्र में बिल्कुल ही काम नहीं हुआ हो। नामवर विद्वानों के उपेक्षापूर्ण रवैए को देखते हुए स्वयं लघुकथाकार इस कार्य के लिए आगे आए हैं। लेकिन जो भी कार्य हुआ है, वह मजबूरी का ज्यादा प्रतीत होता है, क्योंकि अधिकांश आलोचनात्मक आलेख/ लेख पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांकों, सांझा संकलनों अथवा संग्रहों की भूमिका या समीक्षा के लिए लिखे/ लिखवाये गए हैं। आलोचना के लिए आलोचना के रूप में बहुत कम कार्य हुआ है। यही कारण है कि आज तक भी तीन दर्जन से ज्यादा पुस्तकें ऐसी नहीं हैं, जिन्हें आलोचना के लिए लिखा गया हो और इनमें से भी अधिकतर ऐसी हैं, जिनमें विभिन्न अवसरों पर लिखे या लिखवाये गए लेखों को संकलित कर प्रकाशित किया गया है।

लघुकथा समीक्षा की दशा और दिशा पर विचार करते हैं, तो सबसे पहले रामेश्वरनाथ तिवारी की लघुकथा पुस्तक 'रेल की पटरियां' (1954) की आचार्य जगदीश पांडेय द्वारा लिखी गई भूमिका 'लघुकथा: स्वरूप निर्माता' पर दृष्टि जाती है। आचार्य पांडेय ने पहली बार इन लघुआकारीय रचनाओं को 'लघुकथा'

नाम देकर उसे परिभाषित किया है और उसके कला-रूपों की चर्चा की है; जो शुद्ध रूप से लघुकथा- समीक्षा की शास्त्रीय आधार- भूमि मानी जा सकता है।

इस आलेख में आचार्य जी ने लघुकथा के विचारणीय पक्षों को सात उपशीर्षकों में बांटकर लघुकथा विधा की शास्त्रीय समीक्षा प्रस्तुत की है-(1) शीर्षक (2) पात्र और विधान की प्राख्योन्मुखता (3) कथनोपकथन (4) ज्वार- प्रतिज्वार की त्वरा (5) स्थापत्य की गहराई (6) नियताप्ति और उपराम में व्यंग्य की स्थिति और (7) शैली 1

उसके बाद आठवें दशक के पूर्वार्द्ध तक समीक्षा के क्षेत्र में कोई उल्लेखनीय पहल नहीं हुई। आठवें दशक में डा0 शंकर पुणतांबेकर, कृष्ण कमलेश, जगदीश कश्यप, डॉ0 स्वर्ण किरण, डॉ0 रामनिवास मानव आदि ने समीक्षात्मक लेख लिखे। 1977 में प्रकाशित लघुकथा संकलन 'समांतर लघुकथाएं' में बलराम का आलेख 'हिंदी लघुकथा का विकास', 1978 में प्रकाशित 'छोटी-बडी बातें' में महावीर प्रसाद जैन और जगदीश कश्यप के आलेख और 1979 में आये 'नवतारा' के लघुकथा- विशेषांक में अनिल जनविजय, जगदीश कश्यप, बालेंदु शेखर तिवारी, भूपाल उपाध्याय, राधेलाल बिजधावने और रामनारायण बेचैन के

डॉ. सत्यवीर मानव

आलेख विशेष उल्लेखनीय हैं।

नौवां दशक हिंदी लघुकथा के लिए सबसे महत्वपूर्ण रहा।इसकी शुरुआत में ही 1981 में 'नवतारा' का प्रतिक्रिया अंक आया। उसमें प्रकाशित आलेखों में मोहन राजेश का 'हवा में तने मुक्के' विशेष महत्वपूर्ण है। 1981 में ही कृष्ण कमलेश के संपादन में 'लघुकथा : दशा और दिशा' आया। 1982 में डॉ रामनिवास मानव और दर्शन दीप का सांझा लघुकथा संग्रह 'ताकि सनद रहे' प्रकाशित हुआ। इसमें डॉ मानव के छः आलेख भी संग्रहित हैं। इन आलेखों में डॉ मानव ने लघुकथा की ऐतिहासिक परंपरा, उसके स्वरूप, सीमाओं तथा विकास की संभावनाओं पर महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं। 1982 में ही 'लघुकथा : सृजना और मूल्यांकन' आया। इसमें विक्रम सोनी, डॉ चंद्रेश्वर कर्ण, डॉ जगदीश्वर प्रसाद और डॉ बृजकिशोर पाठक के महत्वपूर्ण आलेखों द्वारा लघुकथा के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। 1983 में डॉ सतीशराज पुष्करणा के संपादन में 'लघुकथा: बहस के चौराहे पर' डॉ. स्वर्ण किरण, सतीशराज पुष्करणा, महावीर प्रसाद जैन, भगीरथ और जगदीश कश्यप के समीक्षात्मक आलेखों को लेकर आया। 1986 में 'तत्पश्चात' (सतीशराज पुष्करणा) और 'दिशा-4' (सं0 पुष्करणा) में निशांतर के महत्वपूर्ण आलेख प्रकाशित हुए। 1987 में मुकेश शर्मा ने 'लघुकथा समीक्षा' लघु पुस्तिका के माध्यम से लघुकथा-समीक्षा का प्रयास किया। 1988 में 'कथा- निकष-1' पूर्ण रूप से लघुकथा-समीक्षा को समर्पित पत्रिका निकली। इसके प्रवेषांक में ही डॉ. शंकर पुणतांबेकर, डॉ स्वर्ण किरण, भगीरथ, सतीशराज पुष्करणा और जगदीश कश्यप के महत्वपूर्ण आलेख हैं, जो लघुकथा की सृजन-प्रक्रिया, शिल्प-शैली और संरचना एवं मूल्यांकन पर प्रकाश डालते हैं। 1988 में अमरनाथ चौधरी अब्ज की लघु-पुस्तिका 'लघुकथा: चिंतन और प्रक्रिया' आई, जिसमें मात्र एक आलेख ही समीक्षात्मक है। 1990 में डॉ सतीशराज पुष्करणा के संपादन में 'कथादेश' और 'लघुकथा: सर्जना एवं समीक्षा' आयीं। 'लघुकथा: सर्जना और समीक्षा' में बारह आलेखों के माध्यम से लघुकथा की परंपरा, समीक्षा की समस्याओं, विधागत शास्त्रीयता, रचना प्रक्रिया, शिल्प और शैली, समीक्षा के मानक तत्व आदि पर विचार किया गया है। इसे लघुकथा समीक्षा का पहला गंभीर प्रयास कहा जा सकता है।

1991 में 'लघुकथा: संरचना और शिल्प' (सं0 सुरेशचंद्र गुप्त) और मुकेश शर्मा की 'लघुकथा: रचना और समीक्षा', दो महत्वपूर्ण पुस्तकें आईं अमरनाथ चौधरी अब्ज की 'बूंद-बूंद' 1993 में 'चमत्कारवाद' की घोषणा के साथ आई। लेकिन इसके आलेख 'चमत्कारवाद' के सैद्धांतिक पक्ष को स्पष्ट नहीं कर पाये हैं। परंतु अंत के कुछ आलेख महत्वपूर्ण बन पड़े हैं। 1994 में कमलेश भट्ट कमल की 'साक्षात' आई, जिसमें डॉ कमल किशोर गोयनका से लघुकथा पर बातचीत की गई है। 1997 में कृष्णानंद कृष्ण की 'हिंदी लघुकथा: स्वरुप और दिशा' प्रकाशित हुई। इसमें लघुकथा के क्रियात्मक पक्ष के साथ-साथ सैद्धांतिक पक्ष पर भी महत्वपूर्ण आलेख हैं। 2002 में प्रकाशित 'हिन्दी-लघुकथा: उलझते-सुलझते प्रश्न' में डॉ रूप देवगुण ने लघुकथा विषयक कुछ प्रश्नों को उठाने का सार्थक प्रयास किया है। डॉ. सतीशराज पुष्करणा, कृष्णानंद कृष्ण, नरेंद्र प्रसाद नवीन और डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र के संयुक्त संपादन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक 'लघुकथा का सौंदर्यशास्त्र' 2003 में आई। इसमें 10 आलेखों के माध्यम से लघुकथा के विभिन्न पक्षों पर गंभीरता से विचार किया गया है। इसे हिंदी लघुकथा की दूसरी महत्वपूर्ण संकलित समीक्षा पुस्तक कहा जा सकता है। 2003 में ही डॉक्टर सी0 रा0 प्रसाद का शोधप्रबंध 'हिन्दी लघुकथाओं का शैक्षिक विश्लेषण' प्रकाशित हुआ है, जो न मात्र उपयोगी है, अपितु शोधार्थियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों और नई पीढ़ी के लघुकथा- लेखकों एवं आलोचकों हेतु यह दिशा निर्देश भी करता है ।2

पांच वर्षों के अंतराल के बाद 2008 में बलराम अग्रवाल की 'समकालीन लघुकथा और प्रेमचंद' तथा डॉ शकुंतला किरण की 'हिंदी लघुकथा' पुस्तकें आईं। 'हिंदी लघुकथा' किसी एक लेखक का पहला ऐसा शोधग्रंथ है, जो लघुकथा के सही स्वरूप को जानने-समझने की जिज्ञासा रखने वालों को को संतुष्ट करने की विश्वस्नीय क्षमता रखता है। 3 यह कृति लघुकथा की विधागत अंतरकथाओं एवं आलोचना- दृष्टि के संदर्भ में रामायण- महाभारत के प्रसंगों की तरह कालातीत साबित होगी।4

डॉ. रामकुमार घोटड़ की दो महत्वपूर्ण पुस्तकें, 2008 में 'लघुकथा विमर्श' और 2012 में 'भारत का लघुकथा-संसार' आईं। इनमें डॉ घोटड़ ने लघुकथा विषयक अनेक बिंदुओं को स्पष्ट करने और अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध कराने का सफल प्रयास किया है। 2012 में ही डॉ0 शकुंतला किरण की 'हिंदी लघुकथा' के बाद दूसरा महत्वपूर्ण शोधप्रबंध डॉ सत्यवीर मानव का 'हिंदी लघुकथा: संवेदना और शिल्प' आया है। इसमें डॉ मानव ने हिंदी लघुकथा की परिभाषा, स्वरूप, उद्भव और विकास, हिंदी लघुकथा में संवेदना, हिंदी लघुकथा के शिल्प आदि का विस्तार से विष्लेषण करने के साथ-साथ 22 मानक और विशिष्ट लघुकथाकारों के लेखन के विशेष संदर्भ में हिंदी लघुकथा में संवेदना और उसके शिल्प पर भी विचार किया है। 2014 में अशोक भाटिया की 'समकालीन हिंदी लघुकथा' और 2015 में मुकेश शर्मा की 'लघुकथा के आयाम' ,दो उल्लेखनीय पुस्तकें आईं हैं। 2015 में ही डा0 पुष्पा जमुवार का 'हिंदी लघुकथा: समीक्षात्मक अध्ययन' लघुकथा विषयक समीक्षात्मक लेखों का संग्रह आया है। 2002 में डॉ कमल किशोर गोयनका की पुस्तक 'लघुकथा का व्याकरण' आई थी,इसे 2016 में पुनः 'लघुकथा का समय' के टाइटल से प्रकाशित किया गया है। इसमें डॉ गोयनका ने लघुकथा की प्रासंगिकता, आंदोलन, सृजन-प्रक्रिया आदि पर अपने लगभग तीन दशकों के विचारों को संकलित किया है। 2017 में दो महत्वपूर्ण उपलब्धियां- डॉ बलराम अग्रवाल की 'हिंदी लघुकथा का मनोविज्ञान' और डॉ रूप देवगुण की'आधुनिक हिंदी लघुकथा: आधार और विष्लेषण' का प्रकाशन रहीं। 'हिंदी लघुकथा का मनोविज्ञान'समकालीन हिंदी लघुकथा के विकास को रेखांकित करने, उसका मनोवैज्ञानिक एवं मनोविश्लेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत करने की दृष्टि से निश्चित रूप से बहुत ही महत्वपूर्ण कृति है; तो 'आधुनिक हिंदी लघुकथा: आधार और विष्लेषण' में 61 लघुकथाकारों के पत्र- साक्षात्कारों के आधार पर लघुकथा के परिदृश्य का विष्लेषण किया गया है। 2018 में डॉ अशोक भाटिया की 'परिंदे पूछते हैं (लघुकथा विमर्श)' और भगीरथ परिहार की 'हिंदी लघुकथा के सिद्धांत' पुस्तकें आईं हैं। 'परिंदे पूछते हैं' में डॉ. भाटिया ने लघुकथा विषयक करीब अस्सी ज़रूरी सवालों के जवाब विस्तारपूर्वक सहज- सरल भाषा में दिये हैं, तो 'हिंदी लघुकथा के सिद्धांत' में भगीरथ परिहार ने लघुकथा विधा के समक्ष समय-समय पर आई चुनौतियों को लक्ष्य कर पिछले चालीस वर्षों में लिखे गए उनके लेखों को संकलित किया है। 2018 में ही एक और श्रेष्ठ कृति डॉ. जितेन्द्र जीतू की 'समकालीन लघुकथा का सौंदर्यशास्त्र और समाजशास्त्रीय सौंदर्यबोध' प्रकाशित हुई है।

2019 लघुकथा- समीक्षा की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण वर्ष रहा। इस वर्ष योगराज प्रभाकर की 'लघुकथा: रचना- प्रक्रिया', अशोक भाटिया की 'लघुकथा: आकार और प्रकार' तथा रामेश्वर कांबोज हिमांशु की 'लघुकथा का वर्तमान परिदृश्य' कृतियां प्रकाशित हुईं हैं एवं डॉ. सत्यवीर मानव की 'हिंदी लघुकथा: संवेदना और शिल्प' का द्वितीय संस्करण आया है। 'लघुकथा: रचना- प्रक्रिया' लघुकथा की सृजन-प्रक्रिया से जुड़े विभिन्न प्रश्नों के लघुकथाकारों द्वारा दिये गये जवाबों का पुस्तक रूप है। 'लघुकथा का वर्तमान परिदृश्य' लघुकथा के विविध पक्षों का विशिष्ट विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। पुस्तक लघुकथा विधा को सांगोपांग समझने का सुअवसर प्रदान करती है। 2020 की शुरुआत भी अच्छी रही है। डॉ बलराम अग्रवाल की 'लघुकथा: चिंतन- अनुचिंतन' प्रकाशित हो चुकी है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त बीसवीं सदी की लघुकथाएं (सं0 बलराम) और मधुदीप द्वारा प्रस्तुत 'पड़ाव और पड़ताल' जैसी पुस्तक-श्रृंखलाओं में भी महत्वपूर्ण समीक्षात्मक आलेख उपलब्ध हैं। डॉ रामनिवास मानव, डॉ सतीशराज पुष्करणा, डॉ रामकुमार घोटड़, सतीश साहनी आदि के लघुकथा- साहित्य पर स्वतंत्र रूप से भी समीक्षात्मक पुस्तकें आ चुकी हैं। परंतु लघुकथा के विशाल साहित्य - भंडार को देखते हुए अभी बहुत अधिक कार्य किया जाना शेष है।

डॉ. सत्यवीर मानव

1- हिंदी लघुकथा: स्वरूप और दिशा, कृष्णानंद कृष्ण, पृष्ठ-124

2- डॉ सतीशराज पुष्करणा, हिंदी लघुकथाओं का शैक्षिक विश्लेषण के फ्लेप पर टिप्पणी.

3- डॉ बलराम अग्रवाल, 'हिंदी लघुकथा' का अग्रलेख, पृष्ठ-2.

4- डॉ सतीश दूबे, 'हिंदी लघुकथा' की भूमिका, पृष्ठ-2

ऑपरेशन

माला वर्मा

धीरे- धीरे वक्त करीब आता जा रहा है। ज़्यादा दिन महटियाना ठीक नहीं। एक आँख का ऑपरेशन तो हो ही चुका, दूसरी भी करवा लें तो अच्छा। पिछले पन्द्रह दिनों से मिसेज निगम उधेड़बुन में पड़ी हैं। किसी को साथ लेकर हॉस्पिटल जाना होगा। हाँ, अकेली भी जा सकती हैं पर लौटने के समय कोई तो चाहिए। माना कि ऑपरेशन लेज़र सर्जरी से तुरन्त हो जाएगा फिर भी एक शख्स तो करीब हो। बेटा-बहू शहर में नहीं और होते भी, तो कोई उम्मीद न थी। दोनों को पता है कि माँ का ऑपरेशन तय है फिर भी न फोन पर पूछताछ की और न ही उन्हें याद होगा। सो वहाँ से कोई उम्मीद न रखें तो ही बेहतर हैं। हाँ, बेटी है करीब पर उसकी अपनी गृहस्थी है। छोटा बच्चा, ऊपर से नौकरी! जो स्वयं सुबह से शाम घर में नहीं टिकती, वो माँ की देखभाल क्या करेगी! खबर तो उसे भी है कि माँ को ऑपरेशन करवाना है। फोन पर बातें होती हैं पर एक बार भी सलाह-मशवरा नहीं किया।

मिसेज निगम दु:खी हैं, चिन्तित हैं ज़माने का हालचाल देखकर। अपनी संतान के होते हुए भी माँ बाप कितने निरुपाय हो गए हैं। और यहाँ तो किस्मत ने धोखा दिया है। पति की अचानक मृत्यु से मिसेज निगम अकेली पड़ गई हैं। वो होते तो आज इतना सोचना पड़ता! खैर, मिसेज निगम साहस वाली हैं। अगर बच्चों को परवाह नहीं तो न सही, अपना हाथ जगन्नाथ। जैसे भी हो इस कार्य को पूरा करना ही होगा।

शाम को मिसेज निगम की कुछ सहेलियाँ घर में पधारीं। इन सबका संग साथ वर्षों से चला आ रहा है। और सच पूछिए तो ये एक ऐसा ग्रुप था जिसके साथ कुछ घंटे हँसी मज़ाक में गुज़ार मिसेज निगम फ्रेश हो जाती थीं। थोड़ी देर ताश-वाश, चाय पानी का दौर चला और अब उठने की बारी थी। तभी उनमें से एक महिला ने कहा, ; क्या बात है मिसेज निगम! आज तुम्हारा मूड थोड़ा डाउन लगा। ऐनी प्रॉब्लम ?'

मिसेज निगम ने सकुचाते हुए अपनी समस्या बताई। इतना सुनना था कि मिसेज तालुकदार बोल उठीं, 'हद हो गई यार! हमें तो एकदम से पराया समझ लिया। इतनी छोटी सी बात और तुम तनाव में पड़ी थी! हम किस दिन काम आएँगे? एक बार कहकर तो देखा होता। तुम्हें अपने किसी रिश्तेदार को बुलाने की ज़रूरत नहीं। जब तक हम हैं तुम्हें किसी बात की तकलीफ न होने देंगे। और ये आँख का ऑपरेशन! इसमें समय ही कितना लगता है। हम सब बाहर ताश खेलेंगे और इार तुम्हारा ऑपरेशन खत्म। बस्स तुम्हें थामा और घर पहुँचा गए.'

सहसा विश्वास नहीं हुआ। जिस बात को लेकर वे तनावग्रस्त थीं उसका समाधान चुटकियों में निकल आया था। अश्रुभरी नज़रों से उन्होंने अपनी फ्रेंड्स को देखा व शिद्दत से महसूस किया- उनकी आँखों की रोशनी तो बजाय धुँधली होने के थोड़ी ज्यादा ही दीप्त हो गई थी.

हुकुमचंद जूट मिल, पोस्ट -हाजीनगर,
जिला-उत्तर चौबीस परगना-743135 (पश्चिम बंगाल)
मोबा.: 9874115883, 9007744346
दूरभाष : 033-25887942

पृष्ठ-1 का शेष...

सुपेकर ने विधागत वैशिष्ट्य को बरकरार रखा-डॉ शर्मा

उनकी लघुकथाओं का मूल स्वर गरीबी,भूखमरी और मनुष्यों के साथ दोहरा बर्ताव है। युगीन विसंगतियों पर वे चुटीला किन्तु जोरदार प्रहार करते हैं। वरिष्ठ लघुकथाकार, समालोचक श्री योगराज प्रभाकर (पटियाला,पंजाब) ने अपने भेजे आडियो में कहा कि सुपेकर की लघुकथाएं संवेदना के स्तर पर बेजोड़ होतीं हैं और शिल्प की दृष्टि से अति उत्तम।

अपने लेखन में वे अनावश्यक पांडित्य का प्रदर्शन नही करते। उनकी रचनाओं में गजब की कसावट होती है। लघुकथा में उनके दृश्य चित्रण करने का हुनर बेमिसाल है। अपने आडियो वक्तव्य में संग्रह के भूमिका लेखक, वरिष्ठ लघुकथाकार श्री सतीश राठी ने कहा कि श्री सुपेकर वर्तमान समय के महत्वपूर्ण लघुकथाकार हैं , उनकी अवलोकन दृष्टि बड़ी व्यापक है। वे अपने आसपास के वातावरण से विसंगतियां खोजकर बड़ी चैतन्यता के साथ उनका चित्रण कर देते हैं। विश्वविख्यात चित्रकार, पुस्तक के आवरणकार, श्री संदीप राशिनकर ने अपने आडियो में कहा कि इस संग्रह का शीर्षक सुनते ही मुझे बहुत सी आहटों, विद्रूपताओं के स्वर सुनाई देने लगे थे । इसमे मैंने दर्शाया है कि आज हमे सौहार्द्र ढूंढना है तो मैग्निफाइंग ग्लास लेकर ही ढूंढना पड़ेगा।

प्रारम्भ में सरस्वती वंदना राजेन्द्र नागर निरन्तर ने गाई, शाब्दिक अतिथि स्वागत श्री विजयसिंह गहलोत साकित उज्जैनी ने किया। अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार श्री अनिलसिंह चन्देल ने की। संचालन श्री दिलीप जैन और अंत मे आभार संस्था सचिव डॉक्टर संजय नागर ने व्यक्त किया।संस्था के श्री हरदयाल सिंह ठाकुर,पातञ्जलि शर्मा, डॉ मोहन बैरागी, धनसिंह चौहान, आशीष जौहरी, विजय गोपी भी सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए उपस्थित थे।

चित्र उसी अवसर का।

धरे दर्पण

परिंदों की ऊँची उड़ान

विजय जोशी 'शीतांशु'

विजय जोशी 'शीतांशु'

सर्वे भवन्तु सुख

बहुत घबराई लंबी सांस भरते हुए वह डॉक्टर के केबिन में प्रवेश कर गई - डॉक्टर साहब, मेरे बेटे को बचा लीजिए!

-देखो, बाई आपको अस्पताल के नियमों से ही चलना होगा। अपने काम में लगे ड्यूटी डॉक्टर ने बिना सर उठाये कहा।

-आठ दिन हो गए, रोज आपरेशन की तारीख आगे बढ़ा दी जाती है। छह नम्बर बेड वाले दादा ऑपरेशन के इंतजार में ही चल बसे। और वो तेरह नम्बर वाला ...।

-रुको रुको बाई, मैं डीन सर से बात करता हूँ। वे अभी एक मीटिंग में व्यस्त हैं, कई विदेशी डॉक्टर्स गहन चिकित्सा पर उनसे चर्चा करने आये हैं।

डॉक्टर के इंतजार में माँ का कलेजा बेटे की बिगड़ती हालत से तार-तार हुए जा रहा था। उसकी मिन्नतों ने ड्यूटी डॉक्टर को डीन से मिलने के लिए विवश कर दिया।

ड्यूटी डॉक्टर के साथ जबरदस्ती वह भी मीटिंग हाल में प्रवेश कर गई। उसने देखा डॉक्टर्स का समूह अट्टाहस के साथ शबाब, कबाब, वाइन पार्टी में व्यस्त-मस्त था।

और डीन किसी से सेलफोन पर बात कर रहे थे - आज ही पेसेंट मेरे हॉस्पिटल में शिफ्ट कर दो। शाम तक ऑपरेशन करवा दूँगा। हाँ, अकाउंट में सारा पेमेंट अभी ट्रान्सफर करवा दो।

रिसीवर पर ही दूसरे तरफ के सवाल पर वह झुंझुलाया हुआ था। सफाई के स्वर में डीन कह रहा था - नहीं नहीं, आपको कोई गलतफहमी हो गई है, वह ऑपरेशन तो हुआ ही नहीं था। उस रिटायर सैनिक का एक सप्ताह से कैश जमा नहीं हुआ था। अब मैंने कोई खैरातखाना नहीं खोल रखा था। मेरी साख विदेशों तक है। यहाँ से कोई कैश इन्तजार में दम तोड़ देता है, तो कोई कैश के आभाव में अस्पताल छोड़ देता। इसमें मैं क्या कर सकता हूँ। आप तो पेसेंट भेज दो, ऑपरेशन होते ही आपका बीस परसेंट आपको मिल जाएगा।

उस वार्तालाप को सुनने के बाद लाचार माँ कुछ कहने के काबिल न बची। जब वह बेटे को लेकर अस्पताल की सीढ़ियां उतर रही थी। तो गेट पर लिखा था-

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु माँ कश्चित् दुःख भाग भवेत्।

कोहरा

-बेटा, तेरे पिता जी को जाने क्या इतनी जल्दी रहती है कि मुझे साथ चलने के लिए रोज सुबह की सुहानी नींद से जगाते हैं। और मैं तैयार होकर आती हूँ। तब तक वे मॉर्निंग वाक के लिए अकेले ही निकल जाते है। रिटारमेंट को दस बरस हो गए, लेकिन अभी तक उनका ऑफिस वाला मॉर्निंग क्लब नहीं छूटा।

-माँ! जाने दो उन्हें। उनके बीच रहकर वे स्वस्थ्य मस्त रहते है। हमें और क्या चाहिए?

-लेकिन बेटे, ठंड के इन दिनों में इतनी सुबह, उम्र के इस पड़ाव। ठीक नहीं लगता है। कहते-कहते माँ रुक गई थी। माँ, पिता की सेहत से ज्यादा शहर, समाज व सम्प्रदाय की सीरत से चिंतित लग रही थी।

-बेटा, फिर भी तुम देखकर आओ आज भी देर हो गई, तुम्हारे पिता जी नहीं आये। दूर घने कोहरे के बादल छाये नज़र आ रहे है। कोहरे में लोग अक्सर भटक जाते है, लोगों की दिशाऐं बदल जाती है। अपने नजदीक के लोग नजर नहीं आते हैं। कोहरे में दूसरों के इंडिकेटर, व हेडलाइट के सहारे वाहन व लोग सड़कों पर चलते हैं, और अक्सर एक दूसरे से बिना गलती के भिड़ जाते हैं।

माँ के चिंतन में सदियों का अनुभव गहरा रहा रहा था और मैं हंसी में माँ की बातें टाले जा रहा था।

-अभी तो ठंड ठीक से आई भी नहीं, माँ और तुम्हें कोहरा कहाँ से नज़र आ गया?'

माँ उदास दरवाजे पर टकटकी लगाये बैठी थी। और अचानक सारे संचार माध्यम बंद हो गए, फोन लग नहीं रहा था। दूर आसमान घने दूधिया रंग का होता जा रहा था।

पिता के ऑफिस का एक पुराना चपरासी हांफते हुए घर की चौखट तक आया। रमेश ने दौड़ कर उन्हें सम्भाले हुए पूछा -चाचा, क्या हुआ?

-बेटा क्लब से हम लौट रहे थे कि तुम्हारे पिता जी भगदड़ की चपेट में आ गए। तुम जल्दी मेरे साथ अस्पताल चलो।

सुनते ही माँ बेहोश हो गई। बिना ठंड, बिना मौसम के ही कई माँ-बाप, बड़े-बुजुर्ग तो कई मासूम, युवाओं पर कोहरे का संकट गहराने लगा। सारा देश धू-धू कर दहकते धुँए से निर्मित कोहरे की चपेट में समाता जा रहा है।

बेटी आई है

बात उन दिनों की है, जब मेरी पत्नी प्रथम बार गोद भराई की रस्म के बाद अपने मायके चली गई। और जैसा कि परिवार में परंपरागत मान्यता अनुसार पहली डिलीवरी मामा के या नाना के घर होती है। इसलिए अब पत्नी को डिलीवरी तक मायके में ही रहना था। मिलेनियम वर्ष याने कि सन 2000 में वह शुभ घड़ी आने वाली थी। जो खुशियाँ देने वाली थी। किंतु उन दिनों फोन लैंडलाइन ही हुआ करते थे। और लगभग मोहल्ले में एक ही फोन जैन साहब के यहां था। जो हमारे घर के पास ही रहते थे। हमारे घर तो फोन ना होने से कभी फोन पर सीधे बात करना संभावना नहीं था। अति आवश्यक फोन उन्हीं के यहाँ आते थे।

हम पत्र लिख कर श्रीमती के समाचार पूछ लिया करते थे।

आज अचानक पड़ोस वाले जैन साहब की बेटी दौड़ते हुए आई जिनके घर लैंडलाइन फोन था। और खुश होकर बोली- भैया मिठाई खिलाओ! भाभी का फोन आया है, खुशखबरी है।

-भाभी ने आपको फोन पर बुलाया है।'

-अरे खुशखबरी तो बताओ

-नहीं भैया, भाभी ने कहा है कि केवल भैया से मिठाई मांगना और खुशखबरी मैं उनको ही सुनाऊंगी।' मैंने भी अति उत्साह से जाकर जैसे ही फोन उठाया श्रीमती बोली- तुम पापा बन गये हो।

- बेटी आई है।

-हमारी निहारिका आई है।

जैसा की पूर्व से ही पुंसवन संस्कार के समय हम दोनों ने नाम तय किया हुआ था।

पूरे मोहल्ले में मिलेनियम बेबी के आगमन की मिठाई बट रही थी।

नदी का घर

आज गाँव ने शहर से ऐसा प्रश्न कर लिया। जिसका जिक्र शहर के लिए इतिहास हो गया था। गाँव ने पूछा- तुम्हारे यहाँ एक नदी रहा करती थी। उस नदी का घर कहाँ है? आधुनिक शहर ने तपाक से प्रश्न पर, आश्चर्यचकित प्रश्न कर दिया - वह पुराना नाला?

गाँव अभी अपने प्रश्न पर कायम था।

- नहीं-नहीं, उस 'नदी के घर' का पता पूछ रहा हूँ जिसे पार करके तुम्हारे लिए दूध दही लेकर मेरे अपने गाँव के बेटे जाते थे। और लौटते समय उसी के किनारे शाम को बैठकर अपनी थकान मिटाते थे।

गाँव फिर बोला- जो तुम्हें याद है, वह बदबूदार नाला तो तुम्हारी देन है। जिसे तुमने मिट्टी से बुझवाया। तुम्हरी विकास यात्रा का कुत्सित आयाम था।

शहर बोला- भाई, वह तो ठीक है पर नदी का घर तो मुझे भी नहीं मालूम है। तुम किस जमाने की बात कर रहे हो?

गाँव आज बहुत गुस्से में था। उसके यहाँ आने वाली जल स्रोत मार्ग अवरुद्ध हो गया था। उसके युवा पलायन कर गये थे। दूध की नदियों वाले गाँव में मदिरालयों ने पाँव पसार लिये थे।

गाँव बोला- अपने बड़े भाई महानगर से पूछो जिसने तुम्हें यहाँ बसाया।

ऊँची-ऊँची चिमनियों से धुँआ उगलता शहर मौन था।

-नदी का घर?

आधुनिक उद्योगनगर के नीचे गर्त में धसा पड़ा था। जिसके सीने पर मलवा भर करशहर ने अपना घर बसा लिया था।

पूर्वांचल से...

पत्थर

अनिता रश्मि

कोमल हाथों ने पत्थर पर हथौड़े से पहला वार किया। कोई फर्क नहीं पड़ा। उन्होंने फिर वार किया। एकदम अंतर नहीं आया। वे चूड़ियों वाले हाथ बार-बार चोट करते रहे।

अंततः हथौड़े की लगातार चोट से थरथरा उठे पत्थर। हथौड़े पूरी ताकत से चलाए जाते रहे। कठोर पत्थरों में थरथराहट भरती गई।

पहले वे हिले, फिर दरके, फिर टूटे, और फिर टुकड़े - टुकड़े होकर बिखर गए। वह हथौड़े का नहीं, उसके हाथों और हौसले का कमाल था।

घाम में कर्मरत महिला को देख महाकवि निराला की कलम मचली थी। उनकी कलम से निकली कालजयी कविता - वह तोड़ती पत्थर ...!

महिला के पास शब्दों की ताकत न थी। यदि होती, वह स्वयं लिखती अपने सामर्थ्य की अनकही, अद्भुत कविता

- अबला नहीं, सबला हूँ मैं।

अन्तर

सरिता रानी

बछिया के पैदा होते ही पूरे घर में खुशी के सूर्य चारों ओर चमकने लगे। पापा! बछिया को खुला छोड़ देते और वह सारा दूध चट कर जाती है।

परन्तु जब छोटी ने जन्म लिया। सारे घर में मातम सा वातावरण बन गया। माँ को हल्दी दूध तक नहीं मिला। जब कि मैं देख रही हूँ गाय को दाना पानी सब कुछ समय पर मिल रहा है। पापा कहते है बड़ी होकर जब ब्याही जायेगी तो बछिया देगी और खुब दूध देगी। यह अन्तर देखकर मुझसे नहीं रहा गया। तो माँ से पूछा - क्या छोटी का ब्याह नहीं होगा? क्या वह बच्चों को जन्म नहीं देगी? यदि छोटी को लड़की हुईतो फिर मातम ही...! नहीं बेटे ! बात दरअसल यह है कि... इससे पूर्व माँ अपनी बात पूरी कर पाती, मेरे मुँह से अकस्मात् निकल गयू - तब तो माँ मनुष्यों से अच्छे तो जानवर ही हैं। जो नर मादा में अन्तर नहीं जानते है।

ममता का रंग

मिन्नी मिश्रा

रमा सुबह से ही गुमसुम थी,अपने सारे सर्टिफ़िकेट्स को आलमीरा से निकाल कर लैपटॉप वाले बैग में रख रही थी।

माँ का कलेजा एकलौती बेटी को देखकर फटे जा रहा था। मन में ढाढ़स बांधते हुए बोली- बेटी, तुम ससुराल जा रही हो, वहां सभी को समझने में वक्त लगेगा। यहाँ जैसा कुछ भी नहीं होगा सबकुछ अलग दिखेगा। पर, घबराना नहीं, तुम्हारी सास बहुत अच्छी है, तुम्हें बेटी बनाकर रखेगी।

हाँ एक बात का हमेशा ध्यान रखना, दोपहर को तुम फोन से दिल की बातें मुझे बता दिया करना, कुछ छिपाना नहीं। मेरा ध्यान हमेशा तुम पर ही टंगा रहेगा।

- हूँ....। कहकर रमा चुप हो गई। शायद, वो माँ के सामने अपनी चिंता व्यक्त करना नहीं चाहती थी।

विदाई का वक्त हो गया, चहल-पहल बढ गई। आखिर... वर-वधु के विदाई की रस्मअदायगी भी पूरी हुई..। कार में सवार होकर रमा अपने पति के साथ ससुराल के लिए विदा भी हो गई।

कार की अधखुली खिड़की से, रमा की डबडबाई आँखें.. रोती-बिलखती माँ से बार-बार एक सवाल पूछ रही थी, बेटी धन क्यों परायी होती है?

ठगी, शून्य आँखों से माँ बेटी को अपने से दूर जाते देख सोच रही थी, एक दिन... मैं भी इसी तरह परायी ...!

कार ने गति पकड़ ली... देखते-देखते रमा नजरों से ओझल हो गई।

ससुराल से कभी-कभार ही रमा का फ़ोन आता... वो भी बीच में कट जाता। फोन पर बेटी से अधिक गप्प नहीं होने के कारण माँ बेचैन रहती।

एक दिन शाम में जैसे ही बेटी का फ़ोन आया, माँ अधीर होकर बोली- बेटी, सच-सच बता तू वहाँ ठीक से तो है...? कभी दोपहर को तू मुझसे बात ही नहीं करती!

- ओह! माँ... बात करने का फुर्सत कहाँ रहता है! जल्दी-जल्दी घर का काम निपट कर, दोपहर को मैं कंप्यूटर-क्लास लेने चली जाती हूँ और शाम को आते ही फिर वही किचन। सासू-माँ हमेशा ताना देती है, पढी-लिखी हो इसका मतलब ये नहीं कि मर्द के समान केवल बाहर के कामकाज से ही मतलब रखो। बहू हो, घर का काम भी तुम्हें ही करना है। तुमने कहा था...।

- तुम रो रही हो! क्या हुआ? बोलो माँ। हाँ सब समझ गई.. जमाना कितना भी बदल जाय, बेटी को ससुराल में ...बहू जैसा ही सब देखना पसंद करते हैं।

- हमें बहू नहीं बेटी चाहिए।....ये मात्र जुमले हैं, जिसे कहकर बेटे वाले बेटी के साथ साथ माँ -बाप का दिल भी खरीद लेते हैं। फोन ऑफ़ करते हुए... मोबाइल को अपने छाती से लगाकर, माँ बुदबुदायी हम औरतों को सास बनते ही माँ की ममता का रंग अचानक क्यों गायब हो जाता है?

नारी तेरे कितने रूप

गीता चौबे

- क्या...? क्या कह रही हो... ऐसा कैसे हो सकता है? हे ईश्वर! यह क्या हो गया? फोन का रिसीवर छुट कर गिर पड़ा... सकते में आ गयी सरिता जब गाँव से फोन आया कि उर्मिला का एक्सिडेंट हो गया और घटनास्थल पर ही मौत हो गयी।

उर्मिला सरिता की रिश्ते की देवरानी थी। - अभी उम्र ही क्या थी उसकी... कितने सपने देखे थे उसने जो पूरे होने बाकी रह गए। सोचते हुए सरिता उन दिनों को याद करने लगी जब उर्मिला ब्याह कर आयी थी...।

दहेज मन मुताबिक न मिलने के कारण सासू माँ थोड़ी नाराज रहती थी पर उर्मिला ने अपने मृदु व्यवहार और सेवा से उनका दिल जीत लिया और पूरे परिवार की चहेती बन गयी।

उर्मिला का परिवार गाँव में रहता था, पर अपने बच्चों का एडमिशन शहर में कराया था और उनकी खातिर रोज आना-जाना करती थी। इतनी परेशानियों के बावजूद भी गज़ब का धैर्य था उसमें... हँसते-हँसते सारे फ़र्ज पूरा करती थी।

एक औरत के इतने रूप उर्मिला के अंदर देख सारे गाँववाले दंग थे।

आज उसी उर्मिला को रोज़ की तरह शहर से गाँव आने के क्रम में एक ट्रकवाले ने टक्कर मार दी जिससे वह बुरी तरह कुचली गयी...। सरिता की आंखों से अश्रु की धार बहने लगी...।

दोहरा व्यक्तित्व

संगीता सहाय

मनीषा आँखें बंद किए मुस्कुरा रही थी। खुशी से उसका मन झूम रहा था।वो बहुत खुश थी,आज वृद्धाश्रम में सभी नें उसकी खूब तारीफ की आखिर उसने सब को मिठाईयाँ खिलाई सब का हाल समाचार पूछा। आश्रम में रह रही हर महिला को बडे.प्यार और अदब से पूछ पूछ कर रसगुल्ला, लड्डू और बालुशाही खिलाया था उसने। भला आज के ज़मानें में इतनी नेक दिल औरतें भला कहाँ मिलती हैं। माँ की प्रशंसा सुन कर दिव्या बहुत खुश थी। घर पहुँच कर मुन्नी नें बची हुई मिठाईयाँ मेंज़ पर रख दी।

अचानक मनीषा जोर् से चीखी - इस उम्र में भी इतनी लालच,कितनी बार कहा है आपसे अपनी जीभ को ज़रा रोकिये,कुछ दिखा नहीं कि खानें को तैयार। बीमार होंगी फिर करो इनकी सेवा। दवाईयों का खर्च अलग! दादी जी सहम सी गयीं दिव्या और मुन्नी हतप्रद एक दूसरे की तरफ देख रही थीं दोनों की आँखों में एक सवाल था कोई कैसे इतना दोहरा व्यक्तित्व जी सकता है।

नारी सशक्तिकरण

'माँ' शब्द पश्चिम की धारणा से अलग हमारे सांस्कृतिक-सामाजिक भूगोल का पैमाना है।
नारी में मातृत्व का यही गुण इन लघुकथाओं में विभिन्न रूपों में झलकता है।

सह संपादक
सुनीता प्रकाश

ममता : अन्तरा करवड़े

ऊँआँ; नवजात-शिशु के रुदन से कमरा गूँज उठा। प्राची ने उनींदी, थकी आँखों से देखा-शाम के पाँच बज रहे थे। घण्टा-भर पहले ही तो इसे दूध पिलाकर सुलाया था। कल रात भर भी रो-रो कर जागता रहा था। प्राची को खीझ हो आई। पन्द्रह-बीस दिन के उस नन्हें जीव को गुड़िया जैसे उठाकर उसने गोदी में ले लिया। माँ का स्पर्श पाते ही वह गुलगोथना शिशु सन्तुष्ट हो गया। अपनी बँधी मुट्ठियों की नन्हीं, मूँगफली के दूधभरे दानों के जैसी उँगलियों को ही मुँह में लेकर चूसने लगा। तभी प्राची की माँ वहाँ आई। उठ गया क्या हमारा राजकुमार? चलो, अब घूँटी पीने का समय हो गया है।

क्या माँ! मैं तो परेशान हो गयी हूँ इससे। प्राची तुनक पड़ी। क्या हुआ?

क्या क्या हुआ? सोने भी नहीं देता ढंग से। एक तो रात-रात भर जागता रहता है। हर घंटे-दो घंटे में दूध चाहिए। कभी नैपी गन्दा करता है तो कभी गोदी में रहना होता। ऐसा ही रहेगा क्या ये? प्राची रुआँसी होने लगी।

प्रसव के लिए मायके आई बेटी की इस परेशानी को समझते हुए माँ उसके पलंग पर ही पालथी लगाकर बैठ गयी। नन्हें शिशु को अपनी गोदी में लिया और प्राची का सिर भी अपनी गोदी में रखकर उसे थपथपाने लगी। उनकी आँखों से आँसू बह चले। एक प्राची के गाल पर गिरा। उसने हड़बड़ाकर माँ को देखा। वो बड़बड़ा रही थीं, जब तक इसे माँ चाहिए, तब तक यह सुख भोग ले बेटी। आजकल पराए परदेसों का कोई भरोसा नहीं है। वो धरती निगल जाती है हमारे लाड़लों को।

माँ प्राची के बड़े भैया की सामने ही रखी तस्वीर को देखे जा रही थी जो पिछले दस वर्षों से विदेश से वापस ही नहीं आये थे। नन्हें शिशु ने प्राची की उँगली अपने मैदे-से हाथ में थाम ली थी। प्राची ने अब उसे नहीं छुड़ाया।

दूसरा चेहरा : सुकेश साहनी

मिक्की की आँखों में नींद नहीं थी। वह पिल्ले को अपने पास नहीं रख पाएगा, यह सोचकर उसका मन बहुत उदास था। पिल्ले को लेकर ढेरों सपने बुने थे; पर घर आते ही सब कुछ खत्म हो गया था। माँ ने पिल्ले को देखते ही चिल्लाकर कहा था,अरे, यह क्या उठा लाया तू? तेरे पिताजी ने देख लिया तो किसी की भी खैर नहीं। उन्हें नफरत है इनसे। जा,इसे वापस छोड़ आ।

दादी माँ ने बुरा सा मुँह बनाया था, राम-राम! कुत्ता सोई जो कुत्ता पाले। बाहर फेंक इसे यह सब सुनकर उसे रोना आ गया था। कितनी खुशामद करने पर दोस्त पिल्ला देने को राजी हुआ था। चूँकि दोस्त का घर दूर था; इसलिए एक रात के लिए उसे पिल्ले को घर में रखने की इजाजत मिली थी। पिताजी के आने से पहले ही उसने बरामदे के कोने में टाट बिछाकर उसे सुला दिया था।

कूँ...कूँ की आवाज से वह चौंक पड़ा। बरामदे में स्ट्रीटलाइट की वजह से हल्की रोशनी थी। पिल्ले को ठंड लग रही थी और वह बरामदे में सो रही दादी की चारपाई पर चढ़ने का प्रयास कर रहा था। वह घबरा गया... सोना तो दूर दादी अपना बिस्तर किसी को छूने भी नहीं देतीं ... उनकी नींद खुल गई तो वे बहुत शोर करेंगी...पिताजी जाग गए तो पिल्ले को तिमंजिले से उठाकर नीचे फेंक देंगे...वह रजाई में पसीने-पसीने होगया। माँ ने सोते हुए, एक हाथ उस पर रखा हुआ था,वह चाह कर भी उठ नहीं सकताथा। पिल्ले की कूँ-कूँ और पंजों से चारपाई को खरोंचने की आवाज रात के सन्नाटे में बहुत तेज मालूम दे रही थी।

दादी की नींद उचट गई थी, वह करवटें बदल रही थीं। आखिर वह उठकर बैठ गई।

आनेवाली भयावह स्थिति की कल्पना से ही उसके रोंगटे खड़े हो गए। उसे लगा दादी पिल्ले को घूरे जा रही हैं।

दादी ने दाएँ-बाएँ देखा...पिल्ले को उठाया और पायताने लिटाकर रजाई ओढ़ा दी।

बोहनी : चित्रा मुद्गल

उस पुल पर से गुजरते हुए कुछ आदत-सी हो गई। छुट्टे पैसों में से हाथ में जो भी सबसे छोटा सिक्का आता, उस अपंग बौने भिखारी के बिछे हुए चीकट अंगोछे पर उछाल देती। आठ बीस की बी0टी0 लोकल मुझे पकड़नी होती और अक्सर मैं ट्रेन पकड़ने की हड़बड़ाहट में ही रहती, मगर हाथ यंत्रवत् अपना काम कर जाता। दुआएँ उसके मुँह से रिरियायी-सी झरतीं...आठ-दस डग पीछा करतीं।

उस रोज इत्तिफाक से पर्स टटोलने के बाद भी कोई सिक्का हाथ न लगा। मैं ट्रेन पकड़ने की जल्दबाजी में बिना भीख दिए गुजर गई।

दूसरे दिन छुट्टे थे, मगर एक लापरवाही का भाव उभरा, रोज ही तो देती हूँ। फिर कोई जबरदस्ती तो है नहीं! ...और बगैर दिए ही निकल गई। तीसरे दिन भी वही हुआ। उसके बिछे हुए अंगोछे के करीब से गुजर रही थी कि पीछे उसकी गिड़गिड़ाती पुकार ने ठिठका दिया-'माँ..मेरी माँ...पैसा नई दिया ना? दस पैसा फकत....''

ट्रेन छूट जाने के अंदेशे ने ठहरने नहीं दिया, किंतु उस दिन शायद उसने भी तय कर लिया था कि वह बगैर पैसे लिए मुझे जाने नहीं देगा। उसने दुबारा ऊँची आवाज में मुझे संबोधित कर पुकार लगाई। एकाएक मैं खीज उठी। भला यह क्या बदतमीजी है? लगातार पुकारे जा रहा है, ''माँ..मेरी माँ....''

मैं पलटी और बिफरती हुई बरसी, ''क्यों चिल्ला रहे हो? तुम्हारी देनदार हूँ क्या?''

''नई, मेरी माँ!'' वह दयनीय हो रिरियाया,''तुम देता तो सब देता .... तुम नई देता तो कोई नई देता.... तुम्हारे हाथ से बोनी होता तो पेट भरने भर को मिल जाता.... तीन दिन से तुम नई दिया माँ...भुक्का है, मेरी माँ!'' भीख में भी बोहनी। सहसा गुस्सा भरभरा गया। करुणदृष्टि से उसे देखा, फिर एक रुपए का एक सिक्का आहिस्ता से उसके अंगोछे पर उछालकर दुआओं से नख-शिख भीगती जैसी ही मैं प्लेटफॉर्म पर पहुँची, मेरी आठ बीस की गाड़ी प्लेटफॉर्म छोड़ चुकी थी। आँखों के सामने मस्टर घूम गया अब...?

मोह : अशोक भाटिया

पिताजी अब नहीं रहे थे। बस अस्सी साल की बूढ़ी माँ है। उसे यह घर छोड़ना होगा। हफ्ते-भर से बेटा आया हुआ है। माँ को ले जाने से पहले सारा सामान ठिकाने लगाना है, लेकिन कैसे लगाए? जिस अलमारी को खोलो, वहीं पर सामान मुंबई की लोकल गाड़ी की तरह ठुंसा पड़ा है। बेटा कुछ सालों से कहता आ रहा हे कि मोटा सामान निकाल दो, लेकिन माँ का फालतू का मोह कभी इस बात को नहीं माना। ले-देकर थोड़ी सी छोटी-मोटी चीज़ें, माली और कामवाली को दे दी थीं, बस। आते ही बेटे ने सबसे पहले ट्रंकों वाला कमरा देखा था। कमरा मानों ट्रंको का शोरूम ही था। लोहे की बाबे आदम के जमाने की तीन पेटियां, फिर बड़े ट्रंक से छोटी अटैची तक कोई पन्द्रह नग बड़े करीने से ईटों पर सजे हुए। पेटियों में ही दस बारह रजाइयां, गद्दे और इतने ही कम्बल, खेस, चादरें - माँ बता चुकी थी। बताओ किसलिए संभाल रखा है यह सब? कितनी बार कहा है, मोह छोड़ो, पर नहीं।

एक खीझ के साथ बेटे ने कपबोर्ड के खाने देखने शुरू किये। वहां बदबूदार सीलन भरे खानों में बेतरतीब कपड़ों का आतंककारी साम्राज्य था। हर खाने में पोलीथीन के ढेर सारे लिफाफे, मानो किसी स्कीम के तहत मुफ्त मिल रहे थे। फालतू के मोह ने घर को कबाड़खाना बना दिया है, उसने धीमे से कहा।

वह चाय बनाने रसोई में गया, वहां के सामान पर नज़र पड़ते ही ठिठक गया। सामने ही सात, आठ फ्राईपैन और एक से पांच लीटर तक हर साइज़ के कुकर पंक्तिबद्ध पड़े मुस्कुरा रहे थे। बताओ, इतनों की क्या जरुरत थी। दो जीव और सारे जहाँ का सामान! चार-चार मुली कुतरे किसलिए, जब एक बार में एक का ही इस्तेमाल होना है। दर्जन भर तो चाकू इकट्ठे कर रखे हैं, जैसे किसी का कत्ल करना हो। कोने में दर्जन भर छोटी बड़ी कड़छियां, जिराफ की तरह गर्दन निकाले खड़ी थीं। मारे क्रोध के वह चाय बनाए बिना बाहर आ गया।

माँ- बेटे में पिछले एक हफ्ते से सामान खपाने की कवायद होती रही है। बच्चों के लिए, मंदिर में देने के लिए, जमादार, कूड़े-कबाड़ी और जल-प्रवाह के लिए हिस्से बनाए जाते रहे हैं।

आज माँ ने सबसे बड़ा ट्रंक खोलने के लिए बेटे को चाबियां थमाईं। ट्रंक नीचे उतारने पर माँ ने सामान देखना शुरू किया। सबसे ऊपर कोई पचासेक स्कार्फ और टोपियां रखी थीं। मां ठण्ड बहुत मानती है, पर बेटे के सब्र का बांध टूट गया, बोला - क्या बेकार का ढेर इकट्ठा कर रखा है। इतनी टोपियों का क्या मतलब है, इनमें से पांच-पांच रख लो बस। ये हलके और ज्यादा ठंडे मौसम के लिए अलग-अलग हैं,ये सब साथ लेकर जाऊंगी।

क्रुद्ध बेटा बेबस था। टोपियों के नीचे आठ-दस स्वैटर देखकर बेटे का पारा फिर चढ़ गया। स्वेटरों की एक अलमारी तो पहले ही ठूंस रखी हैं, उसने सोचा। पर मां वहां कोई खास चीज़ तलाश रही थी। स्वेटरों के बीच से गत्ते का डिब्बा उसे मिल गया, जिसे उसने बेटे की तरफ बढ़ा दिया।

अब इसमें क्या है, बेटा मानो तड़प उठा।

मां ने डिब्बा खोला और कहा कि ये तू रख। हलके रंग के नवजात शिशु जैसे मुलायम जालीदार दो स्वेटर बेटे को देते हुए मां ने कहा, मेरे पोते-पोती का ब्याह होगा, उनके बच्चों के लिए हैं। कहते हुए मां के झुर्रीदार चेहरे पर रंगत आ गई। एक क्षण में बेटे का सारा क्रोध बह गया। वह संज्ञा-शून्य सा हो गया, फिर आंसुओं की धार बह निकली।

विजय जोशी 'शीतांशु' की प्रस्तुति

मेरे प्रिय सम्मानीय लघुकथाकार आदरणीय आशीषजी दलाल

नई सुबह, नए सफर, की पहचान हैं। नई सोच नई डगर, पर जीता इंसान है।

एक ही मुलाकात में, वर्षों का सफ़र करवा देने वाले मृदुभाषी, मिलनसार श्री आशीष दलाल जी से मेरी पहली साक्षात भेट सामान्य पहुँच से सुदूर मानी जाने वाली राजधानी दिल्ली में हुई। तो वे मूलतः निवासी मेरे सबसे नजदीकी शहर जिला मुख्यालय खरगोन मध्यप्रदेश के ही निकले। जो 3 दशक से गुजरात के बड़ोदरा में निवासरत हैं। वैसे आप 5 वर्षो से परिंदे ग्रुप के माध्यम से हमसे जुडे हुए हैं। आपके संस्मरणों ने मुझे काफी प्रभावित किया है। आपकी लघुकथाएं निरन्तर नईदुनिया, शुभतारिका, नारी अस्मिता, लोकमत समाचारों के साथ श्री अशोक जैन जी की दृष्टि पत्रिका हरियाणा गुरुग्राम, लघुकथा कलश पटियाला पंजाब के साथ ही देश की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आपका बहुचर्चित लघुकथा संग्रह 'गुलाबी छाया नीले रंग' गुजरात साहित्य अकादमी की अनुशंसा से प्रकाशित हुआ है। साझा संग्रह 'समय की दस्तक' जो सुश्री कांता रॉय जी के सम्पादन व मेरे सह संपादन में 'अपना प्रकाशन भोपाल' से प्रकाशित व दिल्ली लघुकथा अधिवेशन 2019 दिल्ली से विमोचित हुआ है। उसमें आपकी रचनाएँ सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त आप की कलम से लेख, कहानियाँ, उपन्यास भी मुखरित होते रहते हैं। आपने लघुकथा के क्षेत्र में श्रेष्ठ लघुकथा लेखन के लिए अपनी माता जी के नाम से अन्नपूर्णा सम्मान भी घोषित किया है। जो प्रतिवर्ष दिया जाता है। आप अच्छे लेखक ही नहीं बहुत अच्छे इंसान भी हैं। आपको दिल्ली लघुकथा अधिवेशन में 'लघुकथाश्री' से सम्मानित किया गया

है। देशभर की विभिन्न संस्थाओं द्वारा आपका सम्मान किया गया है। दर्जनों सम्मान आपकी साहित्य यात्रा के साक्षी हैं। लघुकथा परिवार आपको आपकी प्रतिदिन की नई सुप्रभात के लिए विशेष रूप से जानता हैं।

आज शौर्य उत्साह व गौरव का प्रतीक माने जाने वाले अगस्त माह के लघुकथा को समर्पित अगस्त उत्सव 2020 शुभारम्भ अवसर पर प्रथम पुष्प के रूप में प्रिय आदरणीय श्री आशीष दलाल जी का आत्मीय अभिनंदन करते हैं। उनके उज्जवल, सुखद व सुदीर्घ भविष्य की शुभकामना के साथ मंगलमय जीवन की कामना करता हूँ। हमें पूर्ण विश्वास है,आगामी समय में आपकी क़लम से ऐसी ही और श्रेष्ठ लघुकथाओं का सृजन मिलेगा।

समय की दस्तक: पढ़ने को मन करे

'समय के दस्तक' एक लघुकथा संग्रह है जिसे लघुकथा शोधकेन्द्र भोपाल मध्यप्रदेश केई सौजन्य से प्रकाशित किया गया है और इस केंद्र की निदेशक लखुकथा विशेषज्ञ कान्ता राय ने संपादित किया है। जहाँ तक मेरी दृष्टि गयी है, संपपादक ने 572 पृष्ठों की इस कृति में समाहित 122 रचनाकारों की लघुकथाओं का चयन करने में गुणवत्ता के साथ कोई समझौता नहीं किया है। प्रारम्भ में डॉ. अशोक भाटिया ने अपने आलेख 'हिन्दी लघुकथा : बुनावट और प्रयोगशीलता' में लघुकथा विधा के विभिन्न तत्वों का सूक्ष्मता से विश्लेषण तो किया ही है, साथ में प्रत्येक विंदु के पक्ष और प्रतिपक्ष

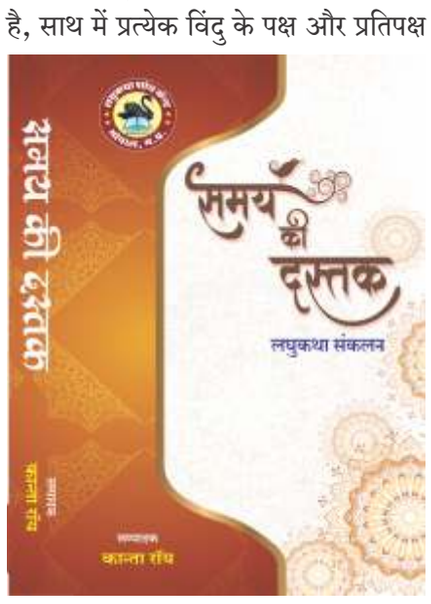

को उद्भासित करते हुए भविष्य की संभावनाओं के लिए विस्तृत आकाश भी खुला छोड़ दिया है। लघुकथा में अप्रस्तुत के महत्व को रेखांकित करते हुए वे कहते हैं- 'मानवेतर पात्र जब प्रतीक रूप में आकर लघुकथा को संचालित करते हैं तो रचना की रोचक बुनावट देखते ही बनती है। तब बड़े आशयों को कम शब्दों में प्रभावशाली रूप में व्यक्त करने की संभावनाएं रहती हैं।'

संपादकीय 'हिन्दी लघुकथा : सृजन और सार्थकता' में विदुषी कान्ता राय ने एक शिक्षक की भूमिका का निर्वाह करते हुए बड़ी रोचकता के साथ एक लड़की पर तेज़ाब डालने की घटना के उदाहरण द्वारा लघुकथा-सृजन की कला को समझाने का सार्थक प्रयास किया है। 'समाज को सही दिशा की ओर उन्मुख करना लघुकथा की सार्थकता है' - इस संदेश को घोषित करने के साथ लेखन-कला को वे प्रतीकों की भाषा में कुछ इस प्रकार व्यंजित करती हैं- 'सृजन के लिए चिंतन की कोख चाहिए। बीज को फूटने के लिए गर्भ में उसे धारण करना होगा, चाहे वह जीव मात्र का शरीर हो या मिट्टी। बौद्धिक चिंतन सृजनात्मक अभिव्यक्ति को साहित्यिक पृष्ठभूमि पर पोषित कर फूटने का अवसर देता है।'

अंत की ध्वन्यात्मकता के संदर्भ से मेरी दृष्टि श्याम सुंदर अग्रवाल की लघुकथाओं 'मरुस्थल की वापसी' और 'मकान' पर ठहर जाती है, यह अलग बात है किन्तु प्रायः सभी लघुकथाएँ समाप्त होते-होते एक ऐसी ध्वनि छोड़ जाती हैं जो देर तक पाठक के भीतर झंकृत होती रहती है। यह सम्पादन की विशेषता है कि दो-चार लघुकथाएँ पढ़ने के बाद कृति कि सभी लघुकथाओं को पढ़ने का मन होने लगता है। समग्रतः लघुकथाकार कान्ता रॉय द्वारा संपादित लघुकथा संग्रह 'समय की दस्तक' की रचनाएँ पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। यह कृति लघुकथा-साहित्य की एक अनमोल धरोहर है।

समीक्षक : ओम नीरव
लघुकथा संग्रह : समय की दस्तक
संपादक : कान्ता रॉय

आर्यावर्त

धंधा

किशनलाल शर्मा

मैं वास्तुशास्त्रियों, पंडितों और तान्त्रिकों के चक्कर में न तो पड़ता हूँ और न ही उन्हें अपने घर बुलाता हूँ। लेकिन आजकल तो अखबार और पत्रिकाएं भी वास्तु के पीछे पड़ी हैं। उनमें वास्तु की तमाम बातें छपती रहती हैं। पत्नी ने उनको पढ़ पढ़ कर हमारे मकान में तमाम वास्तु दोष ढूढ़ लिये थे। अब इतनी पूंजी तो पास में थी नहीं कि मकान को तुड़वाकर वास्तु के अनुसार बना लिया जाये। फिर क्या किया जाये ? पत्नी ने एक पंडित से सलाह ली। पंडित बोला, ''घर के दरवाजे पर काले घोड़े की नाल बांध दो, सब दोष दूर हो जायेंगे।''

पत्नी ने हमें काले घोड़े की नाल लाने का फरमान सुना दिया। सफेद भूरे घोड़े तो बहुत मिल जाते हैं, लेकिन काला... आखिर कई दिनों के प्रयास के बाद हमने काला घोड़ा ढूँढ़ ही लिया।

''नाल कितने की दोगे?''हमने घोड़े वाले से पूछा था।

''पाँच सौ रुपये।''

''पाँच सौ?'' घोड़े की नाल की कीमत सुनकर हम चौंके थे।

''लोहे की नाल है, कोई सोने की नहीं। दस बीस रुपये की बात करो।''

''बाबूजी, आपसे पाँच सौ रुपये ही मांग रहा हूँ, इससे ज्यादा देने वाले मिल जायेंगे।'' मेरी बात सुनकर घोड़े वाला बोला, ''आजकल काले घोड़े मिलते ही कहाँ हैं?''

काफी देर तक उससे चिक चिक करने के बाद भी वह एक भी पैसा कम करने को तैयार नहीं हुआ। मरता, क्या न करता? पत्नी ने साफ हिदायत दी थी, ''चाहे जैसे भी हो, काले घोड़े की नाल ही लानी है।''

मैं बोला, ''ठीक है, पाँच सौ ही लो।''

मैं जेब से पैसे निकालकर जैसे ही देने को हुआ, मेरी नजर घास चर रहे घोड़े पर पड़ी। कई जगह से घोड़े के सफेद बाल झांक रहे थे। मैं बोला, ''तुम्हारा घोड़ा तो सफेद है।''

''नहीं बाबूजी, काला है।''

''झूंठ मत बोलो। सफेद घोड़े पर काली डाई कर रखी है। लोगों को धोखा देते हो। मैं फोन करके अभी पुलिस को बुलाता हूँ।'' मैंने जेब से फोन निकाला था।

मेरी धमकी काम कर गई। वह हाथ जोड़ते हुए बोला, ''बाबूजी, आप कुछ मत देना। नाल वैसे ही ले जाओ, पर किसी से कहना मत वरना मेरा धंधा मारा जायगा।''

मेंढकों के बीच

सुकेश साहनी

वर्षों पहले मैंने अपने बेटे को एक कहानी सुनाई थी, जो कुछ इस तरह थी :

एक बार की बात है, रात के अँधेरे में एक गाय फिसलकर नाले में जा गिरी।

सुबह उसके इर्द-गिर्द बहुत से मेंढक जमा हो गए।

''आखिर गाय नाले में गिरी कैसे?'' उनमें से एक मेंढक टरटराया, ''हमें इस पर गहराई से विचार करना चाहिए।''

''मुझे तो दाल में कुछ काला लगता है!'' दूसरे ने कहा।

''कुछ भी कहो'' तीसरा मेंढक बोला, ''अगर पुण्य कमाना है तो इसे बाहर निकालना होगा।''

''मरने दो!'' चौथा टर्राया।

''हमारी नाक के नीचे रोज ही सैकड़ों गायें-बछड़े काटे जाते हैं, तब हम क्या कर लेते हैं?''

''हमने तो चूड़ियाँ पहन रखी हैं,'' पांचवें मेंढक की टर्र-टर्र।

''भाइयों!'' वहाँ खड़े एक बुजुर्ग ने उन सबको शान्त करते हुए कहा, ''अगर ये गाय न होकर कुत्ता-बिल्ली होता तो क्या हमें इसे मर जाने देना था?''

एकबारगी वहाँ चुप्पी छा गई। वे सब उस बुजुर्ग को शक भरी नजरों से घूरने लगे। अगले ही क्षण वे सबके सब उस पर टूट पड़े। उन्होंने उसे लहूलुहान कर नाले में धकेल दिया। इस घटना से मेंढकों में भगदड़ मच गई। वे सब सुरक्षित स्थलों में दुबक गए। घटनास्थल पर सन्नाटा छा गया।

''फिर क्या हुआ?'' मुझे चुप देखकर बच्चे ने पूछा था।

''फिर? वहाँ से गुजर रहे एक आदमी ने रस्सी की मदद से गाय को नाले सें बाहर निकाल दिया। अपनी जमात से बाहर वाले का ऐसा करना मेंढकों के गले नहीं उतरा। उनको इसमें भी कोई साजिश दिखाई देने लगी। यह बात कानों कान पूरी मेंढक बिरादरी में फैल गई। वे समवेत स्वर में जोर-जोर से टर्राने लगे।''

कहकर मैं चुप हो गया था।

''अब मेंढक क्यों टर्रा रहे थे, पापा?''

''अब वे इस बहस में उलझे हुए थे कि गाय को बाहर निकालने वाला हिन्दू था कि मुसलमान।''

''फिर?'' ''फिर क्या? उनका टरटराना आज भी जारी है।''

बच्चा सोच में पड़ गया था। थोड़ी देर बाद उसने पूछा था, ''पापा, आपको तो पता ही होगा कि वह आदमी कौन था?''

''बेटा, मुझे इतना ही पता है कि वह एक अच्छा आदमी था,'' मैंने उसकी भोली आँखों में झांकते हुए कहा था, ''वह हिन्दू था या मुसलमान, यह जानने की कोशिश मैंने नहीं की क्योंकि तुम्हारे दादा जी ने मुझे बचपन में ही सावधान कर दिया था कि जिस दिन मैं इस चक्कर में पड़ूँगा उसी दिन आदमी से मेंढक में बदल जाऊंगा।'' इसके बाद मेरे बेटे ने मुझसे इस बारे में कोई सवाल नहीं किया था और मुझसे चिपककर सो गया था।

मुझे नहीं मालूम कि यह कहानी मेरे बच्चे के मतलब की थी या नहीं,उसकी समझ में आई थी या नहीं, पर इतना जरूर है कि उस दिन के बाद वह 'मेंढकों' से जरा दूर ही रहता है।

ओवरटाइम

चितरंजन मित्तल

वह टेक्सटाइल मिल में सुपरवाईजर था। उसको सौ फीट लम्बे चलते हुए कपडे के साथ साथ उकडू बैठ कर चलना होता था, और कपड़े की गुणवत्ता को परखना होता था। यही रोज का काम था। जब उसकी उम्र हुई तो घुटनों के दर्द के कारण ये काम दूभर हो गया। मैनेजर के पास पहुँच कर अपनी समस्या बताई तो मैनेजर ने उनका ट्रांसफर दूसरे डिपार्टमेंट में कर दिया।

उसका लड़का इंजीनियरिंग कॉलेज में सेलेक्ट हुआ तो उनका परिवार आर्थिक तंगी में आ गया। लड़का ट्यूशन पढ़ाकर अपना खर्च निकालना चाहता था। मगर स्वाभिमानी पिता ने मजबूती से मना करके दस दिन में पैसे देने का वादा कर दिया। दसवें दिन बेटे के हाथ में पांच हजार रूपये देते समय वे अपने दस दिन के ओवरटाइम, जो कि उन्होंने अपनी मिल में उकडू बैठने वाले डिपार्टमेंट में, मैनेजर के खूब हाथ पैर जोड़कर किया था, घुटने के असहनीय दर्द को भूल गए थे। अब ये ओवरटाइम उनके जीवन का स्थायी अंग बनने जा रहा था।

कुछ खट्टी-कुछ मीठी

गणेश जी बागी

मेरी मकान मालकिन अकेले ही रहती हैं। उनके दोनों बेटे और बहुएँ बाहर रहते हैं और कभी-कभी दो चार दिनों के लिए आ जाते हैं।

आज कार्यालय से आते समय कुछ अंधेरा हो गया था, अहाते में दाखिल हुआ तो देखा कि बड़ी बहू आयी हुई हैं और लॉन में कुछ खाते हुए टहल रही हैं ।

मैंने कहा, ''नमस्ते भाभी जी, कब आयी?''

''आज ही शाम।''

''ओहो! भाभी जान, आपके पाँव इस अंजुमन में क्या पड़े, ये दरों-दीवार, सहन, गलियाँ, बरामदा, अहाता और जिना, सब रौशन हो गयें।''

पकौड़े से भरी तश्तरी मेरे आगे करते हुए भाभी बोली,

''अरे वाह! क्या बात है देवर जी? आज बड़े शायराना और रोमांटिक मूड में लग रहे हैं।'' मैंने तश्तरी से एक पकौड़ा उठाते हुए बोला, ''शायराना-वायराना कुछ नहीं भाभी जी, दरअसल जब आप लोग नहीं रहते हैं तो आपकी महाकंजूस सास सभी बत्तियां बुझा कर इस घर को भूतिया हवेली बनाये रखती हैं।''

''रखिये तश्तरी में पकौड़ा, आप से तो बात ही नहीं करना।''

और तुनक कर भाभी अंदर चली गयी ।

पढ़ी लिखी पत्नी

नीलिमा शर्मा

सुनील का मन पढाई में बिलकुल नही लग रहा था, एग्जाम पास थे। माँ बार-बार गुस्सा कर रही थी कि ज़रा भी नहीं पढ़ते हो मार्क्स कम आयेंगे तो कितना बुरा लगेगा कक्षा में। पर कितनी बार पढ़े, हर बार अक्षर अजनबी से लगते थे। माँ संस्कृत का श्लोक याद करने को दे गयी थी

उद्यमेन ही सिध्यन्ति ना कार्याणि ना मनोरथेड़
न ही सुप्तास्ये सिंहस्य पर्वेशंति मुखे मृगा ।।

बार-बार पढता था पर हर बार भूल जाता अगला शब्द क्या था। जब माँ उसे रसोई से श्लोक सुनाती तो उसे हैरानी होती कि माँ को कैसे याद होता इतनी जल्दी। जब याद नहीं हुआ तो उसने झुन्झुलाहट में किताब फेंक कर कहा,

''मुझसे नही होता याद, आपको कैसे इतना सब याद होता और याद रहता भी, माँ ऐसा करो आप ही मेरी जगह एग्जाम दे आओ। कहना उसकी तबियत खराब हैं, और हाथ बांध कर मुंह बनाकर कुर्सी पर बैठ गया। माँ को उसके भोलेपन पर हंसी आई पर गंभीर होकर बोली, ''ठीक हैं! मैं तो तेरे एग्जाम दे आऊंगी, पर जब तुम बड़े हो जाओगे मुश्किल तो तब होगी ना ।''

''तब क्या मुश्किल होगी?''

''जब तुम्हारे बच्चे होंगे तो उनकी जिद पर उनके एग्जाम कौन देगा?''

अब सुनील जी सोच में पढ़ गये और किताब उठा कर फिर से याद करने की कोशिश में लग गये फिर अचानक बोले वैसे बच्चो को उनकी मम्मी ही तो पढ़ाती हैं आप भी मेरे लिए पढ़ी लिखी पत्नी ले आना।

अहं की दीवार

पदम गोधा

''मैं आई.ए.एस. के साक्षात्कार में चुन लिया गया हूँ, पापा मुझे आशीर्वाद दीजिये।''-पंकज पैर छूते हुऐ बोला।

''अरे यार, यहाँ लग, यहाँ मेरे सीने से। सच आज में बहुत खुश हूँ। माँग, आज तू जो माँगेगा वो दूंगा।''- पिता अरविन्द जी ने उसे गले लगाते हुऐ कहा।

''पापा सच में! क्या आज जो मागूँगा वो दोगे?''-पंकज ने पैर के नाखून से जमीन कुरेदते हुए पूछा

''अरे! बिल्कुल, माँग कर तो देख, मेरा ज़िगर हे तू, मैंने तुझे बाप कर नहीं, माँ बन कर पाला है।''-अरविंद जी बहुत खुश थे।

''तो आप, आज, मुझे बीस साल पहले लिये गये माँ से ना मिलने के वचन से मुक्त कर दें''-पंकज धीमे से बोला।

अरविंद एक क्षण उसे अवाक से देखते रहे, फिर आहिस्ता से बोले -''बेटा, मैं भी एक पहिये की गाड़ी खींचते-खींचते थक गया हूँ। हमारे अहंकार पर तुम्हारा बचपन बलि चढ गया...न जाने कितने बचपन ऐसे ही कुर्बान हो जाते हैं। हम अपराधी हैं, उससे मिलो तो पूछना बेटा, यह अहं की दीवार ... अभी भी टूट सकती हे क्या?''

बाप-बेटे दोनों की आँखों में बरसों से जमीं बर्फ की परत पिघल कर दरिया बन गई थी।

कब तक

ज्योत्सना कपिल

उसकी सूनी नज़रें कोने में लगे जाले पर टिकी हुई थीं। तभी एक कीट उस जाले की ओर बढ़ता नज़र आया। वह ध्यान से उसे घूरे जा रही थी।

''अरे! यहाँ बैठी क्या कर रही हो? हॉस्पिटल नहीं जाना क्या? पति ने टोका तो जैसे वह जाग पड़ी।

''सुनिए, मेरा जी चाहता है कि नौकरी छोड़ दूँ। बचपन से काम कर-कर के थक गई हूँ। शरीर टूट चला है। साथी डॉक्टरों की फ्लर्ट करने की कोशिश, मरीज और उनके तीमारदारों की भूखी निगाह, तो कभी हेय दृष्टि, अब बर्दाश्त करना मुश्किल हो गया है।'' आशिमा ने याचना भरी दृष्टि से पति को ताका।

''पागल हो गई हो क्या? बढ़ते बच्चों के पढ़ाई के खर्चे, फ्लैट और गाड़ी की किस्तें। ये सब कैसे पूरे होंगे?''

''मुझे बहुत बुरा लगता है जब डबल मीनिंग वाले मजाक करते हैं ये लोग। इन सबकी भूखी नज़रें जब अपने शरीर पर जमी देखती हूँ तो घिन आती है।''

''हद है आशिमा, अच्छी भली सरकारी नौकरी है। जिला अस्पताल में स्टाफ नर्स हो। अभी कितने साल बाकि हैं नौकरी को। तुम्हारे दिमाग में ये फ़ितूर आया कहाँ से? थोडा बर्दाश्त करना भी सीखो।'' झिड़कते स्वर में पति ने जवाब दिया।

''चलो उठो,आज मैं तुम्हें ड्रॉप करके आता हूँ।'' उन्होंने गाड़ी की चाभी उठाते हुए कहा। आशिमा की निगाह जाले की ओर गई तो देखा वह कीट जाले में फंसा फड़फड़ा रहा है और खूंखार दृष्टि जमाए एक मकड़ी उसकी ओर बढ़ रही है।

''नहीं, वह हौले से बुदबुदाई, फिर उसने आहिस्ता से जाला साफ करने वाला उठाया और उस जाले का अस्तित्व समाप्त कर दिया।

वे तीन

राजेश उत्साही

वे तीन थे। छड़े-छटाक। साझा किराए के वन बीएचके में रहते थे। घर चालनुमा अपार्टमेंट में दूसरे माले पर था। एक ही डिजायन के 36 मकान थे उसमें।

ज्यादातर मकानों में दूर-दराज कस्बों से आए उन जैसे छड़े-छटाक ही रहते थे। पर एकाध में परिवार वाले भी आ जाते थे।

उनके पड़ोस वाले मकान में भी हाल ही में दस सदस्यों का एक परिवार आया था। परिवार में

पाँच मनुष्य और पाँच पौधे थे। मनुष्य तो मकान के अंदर रहते थे, पर पौधों ने मकान के सामने की छोटे से गलियारे में अपना आवास बनाया था। उनमें तुलसी भी थी, गुलाब भी था, सदाबहार भी।

परिवार के आने से पड़ोस में थोड़ी-चहल पहल हो गई थी। थोड़ी हँसी खनकने लगी थी, थोड़ी खुशबू महकने लगी थी। पर जैसा अक्सर होता है कि शुरुआत में सब कुछ अच्छा लगता है, फिर उसमें ऐब नजर आने लगते हैं।

पौधे थे तो उनमें पानी दिया जाना भी जरूरी था। दिया भी जाता था। पानी तो पानी है, उसकी प्रकृति बहने की है। जहाँ जगह मिले बहने लगता है। पौधे अपने गमले की मिट्टी में जितना सोख पाते, सोख लेते। बचा हुए गलियारे के फर्श पर बहता उन छड़े-छटाकों के दरवाजे को गीला करता आगे निकल जाता। फर्श के ढलान में भी ऐब था। वह बराबर नहीं थी। तो होता यह कि थोड़ा पानी, कुछ देर से थोड़ी अधिक देर के लिए, वहीं ठहर जाता।

बस यह ठहरा हुआ पानी उन तीनों के बीच अनचाहे विवाद का कारण बन जाता।

पहला इस बात से बहुत नाराज होता कि पड़ोस के परिवार को इतना पानी पौधों को पिलाना ही नहीं चाहिए, कि वह बहकर किसी ओर के दरवज्जे पर आए। वह इस बारे में अपने तर्क देता। मसलन पानी बाल्टी से क्यों डाला जाता है। पानी मग्गे या लोटे से डाला जाना चाहिए। डालते समय गमलों के निचले हिस्से पर नजर रखी जानी चाहिए। ताकि जैसे ही पानी नीचे से बहने लगे, उसे डालना बंद कर दिया जाए। अतिरिक्त पानी सोखने के लिए गमलों के आसपास कपड़ों की पार बनानी चाहिए आदि। यह सब कहते हुए वह घर के एकमात्र हाल में यहाँ से वहाँ लगातार चहलकदमी करता रहता। वह बोलते हुए अपनी आवाज भरसक इतनी ऊँची रखता कि पड़ोसी जरूर सुन लें। पर इसका कोई फायदा नहीं था, क्योंकि वे छड़ों की भाषा समझते नहीं थे।

दूसरा थोड़ा उदार था। गुस्सा तो उसे भी आता था। पर उसे पौधों को दिए जाने वाले पानी या पानी की मात्रा से कोई आपत्ति नहीं थी। दरवज्जे पर बहते पानी से भी कोई एतराज नहीं था। उल्टे वह कहता, ''चलो इस बहाने अपना दरवज्जा भी धुल गया।'' वह हॉल के एक कोने में बैठा अपने लैपटॉप में आँखे गड़ाए, कभी-कभी अपनी बात में इतना और जोड़ देता, ''पड़ोसियों को ऐसा कुछ तो करना ही चाहिए कि पानी हमारे दरवज्जे पर ठहरे न। और अगर ठहर गया है तो फिर वाइपर या झाड़ू से उसे थोड़ा आगे बढ़ा देना चाहिए ताकि पानी बहकर गलियारे में बनी मोरी में चला जाए।''

जब-जब पौधों में पानी डाला जाता और वे घर पर होते उनके बीच यह वाद-विवाद जरूर होता।

तीसरा अपने काम में लगा चुपचाप इन दोनों का यह वाद-विवाद सुनता रहता। फिर जब उकता जाता, तो उठता और बाथरूम से वाइपर लाकर पानी को गलियारे में बनी मोरी तक धकाकर आ जाता।

दोनों तीसरे की इस कार्यवाही को हिकारत से देखते और कहते, ''बस हमें इसकी यही आदत पसंद नहीं है।''

संवाददाता लघुकथा वृत्त
मनीष पाटिदार

अतिशयोक्ति

आशा भाटी

मैं अपनी एक सहेली के यहां अचानक पहुंची तो घर की अस्त-व्यस्त हालत को देखकर हक्की-बक्की रह गई. पूरा सामान जहां-तहां फैला पड़ा था. ऐसा लगता था जैसे असामाजिक तत्वों ने लूटपाट की और फिर पिछली गली से नौ दो ग्यारह हो गये हों.

''सरला ओ सरला।'' मैंने दो तीन आवाजें देकर सरला को बुलाना चाहा. जब कोई उत्तर नहीं मिला तो परेशान हो गई. पड़ोसियों से हालात जानने के लिये जिज्ञासावश बाहर निकलने लगी तो अंतःपुर से आती सिसकियों की आवाजों ने अंदर तक झकझोर दिया.

जरूर लुटेरे गृहस्वामिनी को लूटकर भाग निकले हैं. मैंने अपना विश्वास पक्का करते हुए सोचा. फिर रसोई घर की तरफ आवाजों का अनुसरण करती हुई चल दी.

''क्या हुआ? क्यों रो रही हो?'' मैंने सरला को कंधे से पकड़कर धैर्य बंधाते हुए पूछा. सरला फफक कर रो पड़ी. उसके सब्र का बांध फिर फूट चला था. वह बमुश्किल अपने पति से झगड़े की बात बता पाई.

''माई गाड! मैं तो कुछ और समझी थी. घर का यह हाल तुम्हारे पति ने किया है. बाप रे! चलो उठो बिल्कुल नमूना लग रही हो...कहां गये तुम्हारे पति?''

''दफ्तर...!''

''दफ्तर...और वह भी तुम्हें ऐसी हालत में छोड़कर! तुमसे पूछा भी नहीं कि तुम्हारे सिर में यह चोट कैसे लगी. कोई डॉक्टर...वॉक्टर।''

''कहां का डॉक्टर बहिन...एक-एक दिन बड़ी मुश्किल में जी रही हूँ. रोजमर्रा की बातें हैं ये. कोई एक घाव हो तो दिखलाऊं।'' ''क्या...?'' जैसे मैं आसमान से उड़ते-उड़ते जमीन पर आ गिरी.

''रोज-रोज पीकर आते हैं. जुआ अलग खेलते हैं. रोकती हूँ तो परिणाम सामने है. मुझे तो डर लगता है कि एक दिन मेरी बसी-बसाई गृहस्थी जरूर चौपट होकर रहेगी. और कुछ बाकी रह गया हो तो ब्लाउज हटाकर मेरी पीठ देखो...देख लो, कदम से कदम मिलाकर चलने वाला आदम आज हव्वा से कैसे-कैसे बदले ले रहा है. देख लो इस पुरुष को, जो झूठे अहम, क्रोध और दुष्कर्मों के बीच जी रहा है.'' ''तुम लेखिका हो न. लिख दो मेरी यह कहानी. समझा दो पूरी नारी जाति को इस अत्याचार की कहानी. एक न एक दिन उनके साथ भी यही होना है. औरत का जन्म लेना इस पृथ्वी पर कितना कष्टकर हो गया है.''

थोड़ा बोलने वाली सरला आज बम के माफिक फट पड़ रही थी. सचमुच नारी आज भी असहाय है. आज का पुरुष न तो बच्चों की उचित देखभाल करता है और न पत्नी की भावनाओं का समुचित आदर. स्त्री लतभंजन कर यह पुरुष पौरुषमय हो जाता है, उफ! एक समय था जब घर-घर में स्त्रियों का आदर हुआ करता था. स्त्रियां भी अपनी गृहस्थी, पति और बच्चों के प्रति पूरी तरह समर्पित होती थीं.

एम.आई. जी-8, विजयनगर
जबलपुर-482002 (म.प्र.),

उर्वशी

लघुकथा विशेषांक

सं. डॉ. राजेश श्रीवास्तव अतिथि सं. कांता रॉय

उर्वशी के लघुकथा विशेषांक को पढ़ना, ऐसा ही है, जैसे एक सुन्दर उपवन से गुजरना।
एक ऐसा उपवन जिसमे देशज गेंदा, चम्पा चमेली गुलाब हैं तो ऑर्किड, कारनेशन, लिली, ट्यूलिप, एन्थूरियम भी हैं। मंद पुरवाई है, तो पछुआ हवा के झौके भी हैं

सुन्दर कव्हर पृष्ठ से सुसज्जित यह लघुकथा विशेषांक अपने अंक में देशी-विदेशी रचनाकारों को समेटे हुए है। डॉ. राजेश श्रीवास्तव, श्रीमती कान्ता रॉय और उनकी टीम की सम्पूर्ण मेहनत परिलक्षित होती है इस लघुकथा विशेषांक में। इनके संपादकीय के साथ ही, श्री भगीरथ परिहार, सतीश राठी, और डॉ. मालती महावर के आलेख लघुकथा विधा पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं, साथ ही लघुकथा यात्रा का आद्योपान्त व्यौरा भी प्रस्तुत करते हैं। महिला लघुकथाकारों की लघुकथाओं का सटीक विश्लेषण करता डॉ. कुंवर प्रेमिल का आलेख अच्छा बन पड़ा है। भाई घनश्याम मैथिल द्वारा उन समस्त पत्र-पत्रिकाओं का विवरण देता आलेख, जो लघुकथा यात्रा में सहभागी बनी, जानकारी परक है। श्री अशोक भाटिया की लघुकथा विषयक प्रश्नोत्तरी अपने आप में लघुकथा की पाठशाला है। स्मृतिशेष महान कथाकारों की रचनायें, हमारे पूर्ववर्ती नींव के पत्थर रहे कथाकारों को आदरांजलि हैं। निश्चित ही उनको पढ़कर लघुकथा की व्यापकता का आभास होने के साथ ही यह समझने में सहायता मिलती है कि तब और अब की लघुकथा में क्या अंतर है।

आधुनिक लघुकथा के जनक स्व. माधवराव सप्रे की टोकरी भर मिट्टी से आरम्भ अंक स्व. सर्वश्री सतीश दुबे, जगदीश कश्यप, भवभूति मिश्र, शरद जोशी, हरिशंकर परसाई, विष्णु प्रभाकर, सरस्वती माथुर, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, प्रेमचंद, शंकर पुणतांबेकर, राजकुमार आत्रेय, युगल, रमेश बत्रा, अभिमन्यु अनत, मोहम्मद मोइनुद्दीन अतहर, पारस दासोत, विक्रम सोनी और अबीज जैसे 20 दिग्गज कथाकारों की कालजयी लघुकथाओं से संपन्न होता चला जाता है और हमारा समृद्ध विरासत से परिचय कराता है।

बड़ी बात यह, कि इसमें तीन पीढ़ियाँ एक ही धरातल पर खड़ी दिखाई देती हैं और सन् 1901 से 2020 तक के लगभग 120 वर्षों के कालखंड को अपने-आप में समेटे हुए है, यह विशेषांक। असगर वजाहत की आग लघुकथा प्रतीकात्मक लघुकथा है, जो संकेतों में बात करती है। एक गरीब के घर में जब भीषण आग लगती है तब पत्नी कहती है, कि ऐसी आग तो हमारे पेट में लगा करती है, हम उसे देख नहीं पाते थे। यह असगर वजाहत की लेखनी का कमाल है कि वही पेट की आग लिए आदमी खुद के घर में लगी आग को और हवा देने लगता है। सांप्रदायिक हिंसा की आग पर प्रतीकात्मक कथाएं बहुत कुछ कह जाती हैं। ऐसे ही भूख, गरीबी, गरीब का विद्रोह और स्वाभिमान का शंखनाद दिखाई देता है - छोटे बड़े सपने-रामेश्वर कंबोज, पेट पर लात-घनश्याम मैथिल 'अमृत', खुशबू-सतीश खनगवाल की कथाओं में। गरीबी की कसक योगराज प्रभाकर की सुंदर कथा है। मिनी मिश्रा बताती हैं, कि गरीब को कीचड़ में कमल नहीं धान देखना अच्छा लगता है

ममता-मोह तो किसी भी स्त्री का नैसर्गिक गुण है। श्री अशोक भाटिया की लघुकथा मोह में एक बूढ़ी मां के गृहस्थी के सामानों के संग्रह को उसका बेटा कबाड़ा कहकर क्रोधित होता है, परंतु जब मां अपने बेटे से कहती है कि ये दो बहुत मुलायम 'स्वेटर' जब मेरे पोते-पोती का विवाह होगा और उनके बच्चे होंगे तो उन बच्चों लिए देना। यह ममत्व ही संयुक्त परिवार का सार्थक बीज मंत्र है। चित्रा मुद्गल की रिश्ता लघुकथा भी, ममत्व और कर्तव्य के बीच 'कर्तव्य' को वरीयता को देती है। एक स्वाभिमानी बुजुर्ग की आर्थिक और वैचारिक आजादी को पुत्र द्वारा बंधक बनाए जाने का प्रयास होता है तो वह स्वत ही वृद्धाश्रम की तरफ मुड़ जाता है। मधुदीप गुप्ता की एबाउट टर्न ऐसी ही स्वाभिमानी कथा है। बुजुर्गों की उपेक्षा का शिकायतनामा हैं लघुकथाएँ- पेड़- पुष्पा जमुआर, कराहटें-विवेक निझावन, शांति-मधु जैन, भीतरी जख्म- नायब सिंह मंडेर, परंतु बुजुर्गों की आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान और उनके प्रति संवेदना को मुखर अभिव्यक्ति देती हैं कथाएँ, फैसला-अशोक जैन, अपना अपना बिल-कुमकुम गुप्ता, विजेता-सुकेश साहनी, झूठ का सच-संतोष श्रीवास्तव, परंपरा-सुरेखा गुप्ता। बलराम जी की मसीहा की आँखें में जब वृद्ध क्रांतिकारी अपने सामने 'नवआक्रोश' को देखता है, तब उसे लगता है कि उनकी क्रांति की मशाल आगे ले जाने वाला उत्तराधिकारी मिल गया और उनकी आंखें चमकने लगती हैं।

श्री बलराम अग्रवाल की लघुकथा कंधे पर वेताल बहुत प्रभावशाली लघुकथा है, जो शब्दों को नए संदर्भों में परिभाषित करती है। जिसमे विक्रम वेताल को उत्तर देते हैं कि जोश के जुनून में गैर हथियार आदमी का किसी हथियारबंद आदमी से उलझ जाना उसकी मूर्खता ही होती है, संघर्ष नहीं, संघर्ष हेतु तो जिंदा रहना आवश्यक होता है, वेताल का विक्रम से कथन भी मनोरम कटाक्ष है, कि अब आप राजा नहीं रहे समस्याओं का वेताल सदैव आपकी पीठ पर रहेगा। महेश दर्पण की जीवित मृत कथा बहुत रोचक और उल्लेखनीय शिल्प युक्त कथा है, जिसमें फेसबुक की आभासी दुनिया के एडिक्शन को सामने लाया गया है। इसके अंत का पंच, कि इंटरनेट फेल्योर के बाद उनकी अमरता जाती रही। अब वे खुद को मरा हुआ समझ रहे थे, जबकि सांसे बाकायदा चलती नजर आ रही थी। बहुत प्रभावशाली है। हरीश नवल जी की, व्यक्ति की तुच्छ मानसिकता पर आधारित कथा सैंपल भी अच्छी बन पड़ी है।

जिसका दायित्व हरियाली और पर्यावरण की रक्षा का हो, वही उसे उजाड़ने लग जाए तो श्री योगेश शर्मा जी को विडंबना जैसी लघुकथा लिखना आवश्यक हो जाता है।

पर्यावरण प्रेम और जलसंरक्षण की चिंता की अभिव्यक्ति है लघुकथा- दरख़्त-प्रभात दुबे, जीने की राह-क्षमा सिसोदिया, शाप-राजकुमार निजात, कैप्सूल-किरण खोड़के, पेड़-अशोक धमेंनियाँ। दीपक मशाल की लघुकथा 'जंगल का कानून' जिसमें मासूम खरगोश को भेड़िए, लकड़बग्घे आदि की गवाही और जिरह के बाद हत्यारा सिद्ध कर मृत्यु दंड दिया जाता है। यह वकीलों और न्याय व्यवस्था पर बहुत पैना कटाक्ष करती है। बड़ी दुकानों पर सहजतापूर्वक लुटने और गरीबों से मोलभाव करने की आम प्रवृत्ति को सुरेश कुशवाहा 'तन्मय' की मानसिकता में दर्शाया गया है। पति-पत्नी के आपसी झगड़ों में बच्चे पुल का कार्य करते हैं पुल राधेश्याम भारतीय एवं डबल टेंशन राम मूरत राही की लघुकथाएं इसका खूबसूरती से बयान करती हैं। बिल्लियों ने इस बार रोटी बंदर से ना बँटवा कर आदमी को सौंपी।

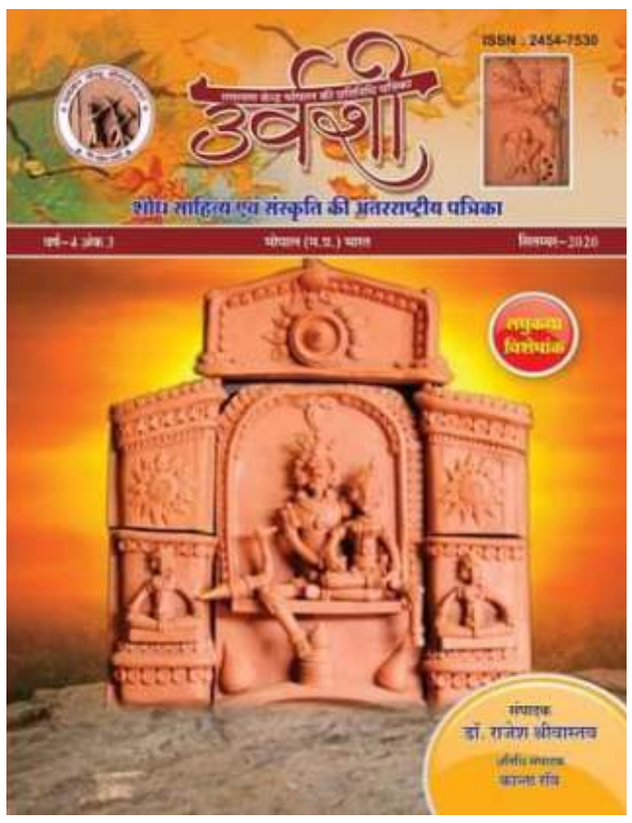

आदमी बंदरों से एक कदम आगे निकला वह रोटी तो खा ही गया, रोटी चुराने के जुर्म में एक रोटी का जुर्माना भरने की सजा भी बिल्लियों को सुनाई। यह मनुष्य की बेईमानी पर चोट करती सुंदर कथा लिखी है डॉ राजेश श्रीवास्तव ने। ह्यूमन हाइबरनेशन चंद्रेश छतलानी जी की अनोखी विज्ञान गल्प कथा है, जिसमें कल्पना की गई है, कि यदि मनुष्य ऐसे ही पर्यावरण को नष्ट करता रहा, तो एक दिन वह नहीं, सिर्फ उसके बनाए रोबोट बचेंगे।

जया आर्य की ममत्व लघुकथा यही बताती है। चित्रा राघव राणा की लघुकथा एक बलात्कार-शर्म बेशर्म बलात्कार पर परिवार, समाज, देश,और पीड़ित के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को सामने लाती है। दिग्भ्रमित युवा छात्र आंदोलन से होती राष्ट्रीय क्षति की ओर इंगित करती है श्री संजीव वर्मा सलिल की लघुकथा मन का दर्पण। मृणाल आशुतोष की टंगटुट्टा भाइयों का स्वार्थ सामने रखती है। शराब जैसी सामाजिक बुराई का प्रतिरोध करती है, नीरज सरस जैन की कथा कहानी घर घर की रचना अग्रवाल गुप्ता की डिजिटल अत्याचार में नए जमाने की परेशानियां और हल बताए गए हैं।

एक शादीशुदा दो बच्चों की माँ को फेसबुक पर प्रेमी परेशान करता है। तब वह पति के सहयोग से योजना बनाकर उसे फोन करती है, कि आपके चैट की वजह से मेरा पति से झगड़ा हो गया है। मैं अपने दोनों बच्चों को लेकर आ रही हूँ, टिकिट भेजिए और बच्चों के एडमीशन की व्यवस्था कराइए। तब प्रेमी घबरा कर उसे ब्लॉक कर देता है। ज्योति जैन की अनपढ़ लघुकथा प्रभावशाली है। जब पन्नी बीनने वाला अनपढ़, रास्ते में मिले पर्स को जिसमें विभिन्न क्रेडिट कार्ड और पांच सौ रूपये थे, थाने में जमा करा देता है। पर सोने की गिन्नी से भरा पर्स मालकिन को ही देता है, पुलिस को नहीं। निश्चित ही यह पुलिस की छवि पर तीखा कटाक्ष है। संध्या तिवारी की लघुकथा 'राजा नंगा है', सतीश राठी की 'राहत' लघुकथा भी बताती है, कि व्यक्ति की मृत्यु की संवेदना के स्तर अलग-अलग होते हैं। रात में कुत्तों के रोने पर गृहिणी को पारिवारिक अनिष्ट की आशंका से नींद नहीं आती, परंतु जब किसी अन्य परिवार में मृत्यु की सूचना मिलती है, तो बड़ी राहत महसूस होती है। एक माँ के ममत्व का शिद्दत से आभास कराती है श्री मुकेश वर्मा की लघुकथा कांच पर छाप की तरह स्थिर। तथाकथित निम्न जाति के लोग उच्च जाति के लोगों पर भेदभाव का आरोप लगाते हैं, परंतु स्वयं ऊंच-नीच की भावना से ग्रस्त हैं। सिलसिले का अंत में डॉ. सत्यवीर मानव इसका हल बताते हैं।

खुशियाँ कभी साधन और पैसे की मोहताज नहीं होती। वसुधा गाडगिल की बौछार लघुकथा के यही निहितार्थ हैं। बेटियों पर अन्याय की बड़ी मार्मिक कथा है मजबूर जिसमें स्त्री संवेदना, सशक्तिकरण और विद्रोह दिखाई देता है छुटकारा-विभा रश्मि, जरूरत-सुनीता मिश्रा, मिट्टी-उपमा शर्मा, विभूति-बृजेश कानूनगो, पिंजरे को पकड़कर झूलती चिड़िया-उमेश महादोषी, बार गर्ल-कल्पना भट्ट, सीमाओं का बंधन-वंदना गुप्ता की कथाएँ। एक विशेष कथा है भगवान चावला की 'धरती में गड़ी स्त्रियां' अपने कथ्य और शिल्प में उत्कृष्ट है, जिसमें नारी मुक्ति का उद्घोष है। युद्ध की विभीषिका में मौत का तांडव, किशन लाल शर्मा की लघुकथा मौत में देखा जा सकता है। पुरुष के अहम और हीन प्रवृत्ति की बहुत उत्तम ढंग से मनोवैज्ञानिक पड़ताल करती है श्रीमती कांता राय की विचार और भावना जिसका शिल्प भी आम कथा से हटकर है। बुजुर्गों की उपेक्षा का शिकायतनामा हैं लघुकथाएं पेड़- पुष्पा जमुआर, कराहटें-विवेक निझावन, शांति- मधु जैन, भीतरी जख्म- नायब सिंह मंडेर, परंतु बुजुर्गों की आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान और उनके प्रति संवेदना को मुखर अभिव्यक्ति देती हैं लघुकथाएं, फैसला-अशोक जैन, अपना अपना बिल-कुमकुम गुप्ता, विजेता-सुकेश साहनी, झूठ का सच-संतोष श्रीवास्तव, परंपरा-सुरेखा गुप्ता। जीव दया और प्राणि संरक्षण को प्रेरित करती है कथाएं- हुक्कू बंदर-अशोक मनवानी, नई दीवाली-मधुलिका सक्सेना, मेमने का प्रश्न-सुमन ओबेरॉय, आगंतुक-कपिल शास्त्री। अन्धविश्वास पर चोट करती लघुकथाएं हैं- कुंडली-राजीव नामदेव राणालिधौरी, लकीर पीटना-कर्नल गिरजेश सक्सेना, पोलियो वाला लड़का-वीरेंदर भाटिया, साप्ताहिक भविष्यफल-शकुंतला किरण। परिवार प्रेम का मार्ग प्रशस्त करती हैं लघुकथाएं- रास्ता-पवन शर्मा, पुल-राधेश्याम भारतीय, कसक-अंजू निगम, भूमिका-रसीद गौरी, बस और नहीं-शशि बंसल, अबोध-मेघा मैथिल, अम्मा अभी जिन्दा हैं-मुजफ्फर इक़बाल सिद्दीकी, हसरत-मानकुंवर मैंना, माँ की चिंता-सुभाष नीरव, पाप-प्रीति प्रवीण खरे, माँ-प्रमोद कुमार गोविल, आप तो दादा हैं-बी एल आच्छा, महिला दिवस-मुरलीधर वैष्णव, उड़ान-मौसमी परिहार, बदलते रिश्ते-शाइस्ता खान, लकी बहू-हेमंत राणा। कोरोना काल के कष्टों और संवेदनाओं से रूबरू कराती हैं

कथाएँ- मैनेज-अब्दुल हमीद इदरीसी, सरप्राइज-चरणजीत सिंह कुकरेजा, बड़े लोग-शेफालिका श्रीवास्तव, संवेदना-सीमा मधुरिमा। नारी संवेदना, सशक्तिकरण और विद्रोह को स्वर मिला है लघुकथा- छुटकारा-विभा रश्मि, जरूरत-सुनीता मज़हर, मिटटी-उपमा शर्मा। कुत्सित राजनीति की कालिख उजागर करती लघुकथाएँ हैं- चुनाव का मौसम-मृदुल त्यागी, जरूरत-संजय पहाड़े शेष, प्रतिकार-रामरतन यादव, सियासत-हरिनारायण हरि, भेड़ें-राहिला आसिफ, डूबते अरमान-सतविंदर कुमार। दफ्तरों में होते अन्याय देखे जा सकते हैं लघुकथा- छुट्टी-सुनीता प्रकाश, आरोप प्रत्यारोप-विजय जोशी। दिनेश श्रीवास्तव की नीम का पेड़ सामंतवादी अन्याय को उजागर करती है। गरीबी की मार्मिक पीड़ा को महसूस किया जा सकता है लघुकथा- अलिखित प्रथा-रूपेन्द्र राज तिवारी, कफ़न-प्रदीप कुमार शर्मा, अर्थ और अर्थी-चंद्रा सायता, खिसकते पल-रंजना शर्मा। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य प्रभावशाली लघुकथाएं हैं- पेंट की सिलाई-राजकुमार घोटड़, उच्छृंखल-डॉ. सतीश पुष्करणा, आइना-रेणुका सिंह, जिव्हा का वर्चस्व-हरि जोशी, मिनी को सजा-कमल चौपड़ा, रक्त चरित्र-राजेश शॉ, पापा-रवि प्रभाकर, बिजूका-श्यामसुन्दर अग्रवाल, उसके बाद-आशागंगा श्रीढोड़कर, निर्गुण फ्यूजन-अंतरा करवड़े, असहाय-उषा भदौरिया। बांग्ला, पंजाबी, और भोजपुरी लघुकथाएं भी ध्यान आकर्षित करती हैं। बीच-बीच में लगभग बीस विद्वानों के लघुकथा-चिंतन-कण संग्रह में सौंदर्य-वृद्धि करते हैं। कुल मिलाकर संग्रह उत्कृष्ट, रोचक, पठनीय एवं संग्रणीय दस्तावेज है।

गोकुल सोनी

पाठकीय प्रतिक्रिया 'लघुकथा वृत्त'

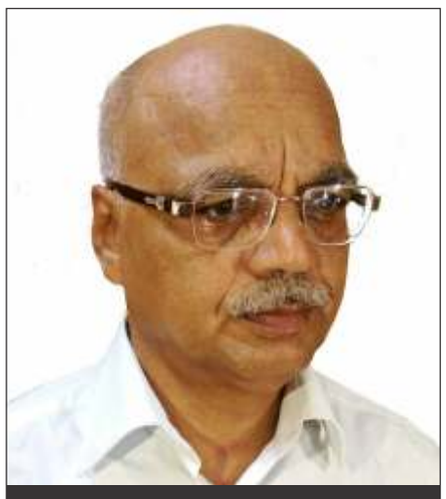

पवन जैन

सुश्री कांता राय जी के प्रयासों से अब भोपाल लघुकथा विधा के लिए एक केंद्र बन गया है। उनके द्वारा लघुकथा शोध केंद्र की स्थापना की गई, साथ ही उनके संपादन में 'लघुकथा वृत' समाचारपत्र का प्रकाशन किया जा रहा है।

लघुकथा शोध केंद्र भोपाल नियमित रूप से लघुकथा गोष्ठी का आयोजन करता है।

इस गोष्ठी में नव लघुकथाकारों को लघुकथा तकनीक की जानकारी दी जाती है तथा उन्हें प्रतिष्ठित लघुकथाकारों के साथ मंच पर लघुकथा पढने का अवसर दिया जाता है, जिस पर विद्वान रचनाकारों द्वारा समीक्षा की जाती है। इन्हीं गोष्ठियों में पढी गई रचनाओं को पुस्तकाकार देने का महती कार्य केंद्र द्वारा किया गया। इस संकलन में जहाँ वरिष्ठों की सहभागिता है वहीं नवोदितों को भी स्थान दिया गया है, साथ ही केंद्र में पधारे कुछ अतिथियों की कथाओं को भी स्थान दिया गया है।

संकलन में कुल 54 कथायें हैं जिनमें से अधिकतर महिला कथाकार है, इसका तात्पर्य यह है कि भोपाल में महिला लघुकथाकार कितनी जागरूक हैं। उनके द्वारा न सिर्फ स्त्री विमर्श पर कलम चलाई गई है बल्कि सामाजिक विसंगतियों एवं कुरीतियों के उन्मूलन में तीक्ष्णता से प्रहार किया गया है।

मधुलिका सक्सेना की अगली पीढ़ी कथा पानी के दुरुपयोग के परिणामों को दर्शित करती है।कुंकुम गुप्ता जी की कथा 'कटर' कथा मुंशी प्रेमचंद की कथा चिमटा के पात्र से जोडती बहुत सुंदर कथा है। जया आर्य जी ने नौकरी पेशा औरत की जिंदगी की तुलना मदारी के खेल में बंदरिया से की है। सरिता बघेल ने काला कौआ में दादा जी का पेड के साथ आत्मीय संबंध की कथा कही है। प्रतिभा श्रीवास्तव ने तुम सी माँ कथा में माँ विधवा बेटी को शीघ्र पुनर्विवाह की सलाह देती है जबकि बेटी की माँ जैसी बनने की आकांक्षा थी।

कांता राय जी का स्वभाव ही है अन्याय का विरोध यही प्रदर्शित किया है अपनी कथा अन्याय के विरोध में में। कथा स्पष्ट करती है कि चुप रहने से अधिकार नहीं मिलता है। कथा में नायिका शीघ्र ही यह समझ लेती है तथा विरोध करने तैयार हो जाती है। यहाँ ध्यान देने योग्य है कि विरोध, अनुशासन हीनता, उच्छृंखलता नहीं है। डॉ.प्रीति प्रवीण खरे ने दादी माँ की दकियानूसी सोच में आये परिवर्तन को अपनी कथा सूर्यास्त में दर्शित किया है। वास्तव में इस कथा का शीर्षक तो सूर्योदय होना चाहिये था।

कीर्ति श्रीवास्तव ने विधवा महिला को अशुभ मानने के अंधविश्वास को तोड़ा है अपनी कथा शुभ-अशुभ में।

सुमन ओबेरॉय ने मैमने के प्रश्न में सहजता से प्रश्न किया है कि जो जानवरों को चबा-चबा कर खा जाता है वह इंसान कैसे हो सकता है।

वंदना दवे ने अपनी कथा सती में अनोखी प्रार्थना की है, नायिका चाहती है कि उनकी मृत्यु के पूर्व पति की मृत्यु हो जाये क्योंकि उनकी अनुपस्थिति में बहू की जली कटी कैसे सुन पायेंगे।

कांति शुक्ला ने आवश्यकता कथा में गरीब बच्चियों को शिक्षित न किये जाने में उनके अभिभावकों की सोच है। उसे बदलने की उन्हें शिक्षित किये जाने की आवाश्यकता है।

नयना (आरती) कनिटकर ने हस्तरेखा कथा में स्पष्ट किया है कि कर्म ही भाग्य का निर्माता है।

डॉ. मालती बसंत ने 'अपना-अपना दुख में एक बहिन के पास पर्याप्त राशन नहीं जुटा पाने का दुख है तो दूसरी बहिन के पास राशन की अधिकता के कारण दुख है। शशि बंसल ने पेसिव स्मोकिंग पर सहजता से कटाक्ष किया है। पति मजे ले लेकर सिगरेट पीने के आदी है और दुष्परिणाम भोगने पडते हैं पत्नी को।

नीना सिंह सोलंकी ने हवा के विरुद्ध में एक कर्मठ ईमानदार पुलिस अधिकारी को राजनीति किस प्रकार प्रताड़ित करती है कि उसे हवा के विरुद्ध चलने को मजबूर कर देती है।

अर्चना मिश्र ने बेटे की शादी में दहेज पाने के लिए बेटे की इच्छा के विरूद्ध माता पिता द्वारा अपनाई जा रही तिकड़मों को उजागर किया है।

महिला श्रीवास्तव वर्मा ने 'अनमोल' कथा में नोट फटा होने पर उसकी कीमत कम नहीं होती तो थोड़ी सी अपंगता से व्यक्ति की कीमत कैसे कम हो जायेगी।' इस कथन को सिद्ध किया है अपनी कथा अनमोल में और एक अपाहिज नायक को भीख मांगने से दूर कर सब्जी व्यवसाय में सफल करती है।

उषा जायसवाल ने अपनी वसीयत कथा में अनोखी वसीयत की है। लालची बेटे को पूरी संपत्ती तथा बेटी को यह आशीर्वाद की बच्चों में संस्कार डाले। यह सहज कथा बहुत कुछ कहने में सफल है।

शालिनी खरे ने असामाजिक तत्वों द्वारा झुग्गी झोपड़ी बालों को बदनाम करने के कृत्य का पर्दाफ़ाश किया है कडवा सच कथा में।

डॉ. वर्षा ढोवले ने माँ की महत्ता पर कथा कही है। उषा सैनी ने 'तडका' कथा में तेजपत्ता और धनिया पत्ती को प्रतीक बना कर कथा कहीं है। सब्जी में तेजपत्ता अपना स्वाद घोल देता है पर खाते समय उसे बाहर फेंक दिया जाता है, जबकि धनिया पत्ती स्वयं भी समाहित हो जाती है।

डॉ. रंजना शर्मा ने अपनी कथा हठ में अंतर्जातीय विवाह पर समाज के दृष्टिकोण को उजागर करते हुए बच्चों की पसंद को सर्वोपरि मानते हुए सहमति दी है।

डॉ. राजश्री रावत ने माँ के मनोभावों को बहुत सुंदर ढंग से बुना है अपनी कथा मकान मालिक में। माँ बेटे के नाम अपना मकान कर देती है, पर बेटा माँ से मकान खाली करने को कहता है तब माँ कहती है मैंने तो बेटे को मकान रहने को दिया था वह तो मकान मालिक बन बैठा।

सुनीता प्रकाश ने युनियन की कारगुज़ारियों पर कलम चलाई है।

डॉ. वर्षा चौबे ने किताबों को प्रतीक बना कर बेबसी कथा कही है। सुमन त्रिपाठी ने नसीब अपना-अपना में स्पष्ट किया है कि खुशियाँ पैसों की मोहताज नहीं होती हैं।यह जरूरी नहीं महलों में रहने वाले खुश और झोपड़ी में रहने वाले दुखी हों।

डॉ. उपमा शर्मा ने सामाजस्य कथा में सयुंक्त परिवार की आवश्यकता पर बल दिया है। संतोष श्रीवास्तव ने अपनी कथा गिद्ध में गिद्धों की उपमा उन लोगों से की है जो औरतों के जिंदा मांस को नोंचते हैं। कथा में दखमा का चित्रण है, जो सामान्य पाठक के लिए ज्ञानवर्धक है। साथ ही दख्मा में गिद्धों की कमी पर भी चिंता व्यक्त की गई है। डॉ. राम वल्लभ आचार्य ने भीड़ की मानसिकता का सुंदर तरीके से चित्रण किया है कथा भीड़ में।

कपिल शास्त्री की चर्चित कथा 'हार-जीत इस संकलन का हिस्सा बनी। अरुण अर्णव खरे ने प्रेम में त्याग को सर्वोपरि प्रदर्शित किया है, साथ ही 'चैक भाषा' के कुछ शब्दों से परिचय कराया है।

गोकुल सोनी ने 'विश्वास' कथा में श्राद्ध के समय पितरों को जल और पानी देने पर कोमल मन के बच्चे द्वारा प्रश्न उठाया गया है कि जीते जी उन्हे पानी देने में आना कानी की जाती थी अब क्या यह पानी और भोजन उनके पास पहुँच जायेगा। मुजफ्फर इकबाल सिद्दीकी ने अपनी कथा फालतू में पत्नी की चिंता जाहिर की है।

आज की जीवन शैली में पति अपने काम में इतना व्यस्त रहता है कि घर लौटने में रोज विलम्ब करता है और बच्चे जो अब अन्य शहरों में है, उन्हे अपने कामों से फोन पर भी बात करने की फुरसत नहीं है, इस स्थति में वह अपने आप को फालतू निरूपित करती है जो परिवारजनों की व्यर्थ ही चिंता में घुली जा रही है। हरि जोशी जी ने अपनी कथा होनहार बिरवान के होत चीकने पात में आरक्षण पर कटाक्ष किया है।

विनोद कुमार जैन ने किताब बाले बाबू में नेता और लेखक पर अच्छा कटाक्ष किया है।

सुरेश कुशवाहा 'तन्मय' जी ने अपनी कथा अनूठी बोहनी में मनोभावों को बहुत बारीकी से बुना है। नायक अपनी रोजी-रोटी जिससे चलाता है वह लुटाने के लिए तो नहीं है पर उससे बच्चे का दुख भी नहीं देखा जा रहा। वह उसकी माँ की मनःस्थिति को महसूस कर रहा है। एक जेब के पैसे जो उसके अपने हैं से अपनी चलती फिरती दुकान से खिलोने खरीद कर बच्चे को पकडता है। अपनी दुकान की बोहनी करने का यह अनोखा अंदाज बहुत कुछ सोचने पर मजबूर करता है। सहजता से कही गई यह कथा अंतस को टटोलती है। यह पुस्तक पाठकों को पसंद आयेगी।

कृष्णा मनु की लघुकथाएँ

सहमा सुख

कमरे में प्रवेश करते ही उन्होंने सरसरी निगाहों से चारो तरफ देखा। कोने में रखे रंगीन टीवी पर निगाह पड़ते ही खुशी की झुरझुरी सी उनके शरीर में उठ आयी- आह! कितनी मशक्कत से खर्च में कतरब्योंत कर मैंने यह टीवी खरीदी थी। प्लास्टिक की चार कुर्सियों की जगह सेकेण्ड हैंड सोफा लगवा पाया था। उन्होंने सोचा।

उनके लिए नये वर्ष की शुरुआत भी बड़ी अच्छी हुई थी। डूबा पैसा वापस मिला था। आज एक गिफ्ट भी उनके नाम से निकल आया था। हालांकि यह उनके लिए अप्रत्याशित घटना थी क्योंकि आज तक उन्हें एक धेला तक कहीं से नहीं मिला था।

- जीवन के ये छोटे छोटे सुख ही तो हम जैसे लोगों के हृदय को गतिशील रखे हुए हैं वरना। सुख के इस पल को पकड़ते हुए उन्होंने पत्नी को आवाज दी।

- आती हूँ। आ गए आप? चाय के लिए पानी चढ़ा रही हूँ।

- चाय बनती रहेगी, पहले आओ तो सही। एक खुशखबरी है।

पत्नी हाथ पोंछती हुई आयी- हाँ, कहिये।

पत्नी के चेहरे पर उदासीनता देख उन्होंने स्नेहसिक्त हो कहा- आओ बैठो। अरे हम थोड़ी देर के लिए खुश नहीं हो सकते क्या?

-हाँ, हाँ क्यों नहीं, जब घर फूंक कर तमाशा देखा जा सकता है तो हम खुश क्यों नहीं हो सकते? जानते भी हैं आप कि चीनी कितनी महंगी हो गई, चीजों के दाम कहां उठ गए?

पत्नी के बेरूखे व्यवहार से उन्हें थोड़ा दुख हुआ- तुम बैठो तो...।

- बैठती हूँ,पहले चाय ले आऊँ।

पत्नी चाय के साथ एक लिफाफा भी लेते आयी। चाय की चुस्की के साथ वे लिफाफा खोलने लगे। पत्नी बोली- बेटा का पत्र आया है। कोचिंग लेना चाहता है। बीस हजार तत्काल चाहिए। ड्राट बनवाकर भिजवा दीजिये।'

- बबबीस हजार! उनके मुंह से चीख निकल गई मानो बीस हजार बिच्छु एक साथ डंक मार दिये हों। बिना एक शब्द आगे बोले वे चाय की चुस्की लेते रहे जैसे घूँट घूँट कर गम पी रहे हों। बेचारा सहमा सा सुख दूर खड़ा था।

अनुरोध से आदेश तक

उसने घड़ी देखी। आफिस बंद हो चुका था। सारे स्टाफ जा चुके थे। वह भी उठने ही वाला था कि बॉस का कॉल पिउन बुलाकर जा चुका था।

आखिर बात क्या हो सकती है? आफिस बंद होने पर कभी बॉस ने बुलाया नहीं। वैसे भी उसका कार्य निष्पादन इतना परफेक्ट होता है कि बॉस को बुलाने की जरूरत ही नहीं पड़ती।

सोचते सोचते वह बॉस के सामने था।

- परेश जी, आप को एक कष्ट दे रहा हूँ। संकोंच हो रहा है.... क्या कहूँ? आज मेरा ड्राइवर नहीं है... और यह बुजुर्ग पिउन... ठीक से चल भी नहीं पाता। मेरे लिए...दो सिगरेट ले आइये प्लीज..... यहीं, बाजार से।

परेश को बुरा लगा फिर भी बॉस का अनुरोध वह टाल नहीं सका।

- कोई बात नहीं सर। मैं अभी ला देता हूं।'

सिगरेट लेकर बॉस 'थैंक यू' का जैसे माला जपने लगा।

दो दिनों बाद... फिर वही समय... बॉस का वही कॉल।

अन्यमनस्क भाव के साथ परेश केबिन में दाखिल हुआ। इस बार बॉस का भाव भंगिमा में अंतर था।

- परेश जी, यह लीजिये पैसे, मेरे लिए दो सिगरेट ले आइये।'

सिगरेट होठों में दबाकर पता नहीं बॉस ने क्या कहा....परेश को लगा बॉस ने 'थैंक यू' कहा है।

दूसरे दिन फिर वही समय, वही कॉल।

- दो सिगरेट लाना, जरा जल्दी, मिटिंग में जाना है।

यह बॉस का आदेश था। आदेशात्मक लहजे ने परेश के तापमान को जैसे उफान पर ले आया लेकिन अगले ही क्षण वह ठण्ढा हो गया। बीवी बच्चों का चेहरा सामने आ गया था।

लघुकथाकार कृष्ण मनु को
महात्मा गांधी साहित्य शिखर सम्मान

कृष्णा मनु

विगत दिनों विश्व हिंदी साहित्य परिषद द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में अपरिहार्य कारणों से उपस्थित नहीं हो पाने के कारण दिनांक 27 जनवरी 2020 को वरिष्ठ लघुकथाकर श्री कृष्ण मनु को एक संक्षिप्त कार्यक्रम में विश्व हिंदी साहित्य परिषद द्वारा महात्मा गांधी साहित्य शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया ।

लघुकथा लेखन में विगत 40 वर्षों से चर्चित नाम कृष्ण मनु लघुकथा के पर्याय के रूप में जाने जाते हैं। अभी तक उनकी अनेक रचनाएं प्रतिष्ठित अखबारों, पत्रिकाओं में स्थान पा चुकी हैं । कृष्ण मनु की लेखिनी हमेशा समाज के उस पक्ष को इंगित करती रही है जिसके माध्यम से उन्होंने शोषित, वंचित, किसान, मजदूर, सामाजिक सुचिता, समानता अर्थात आमजन के करुणा को, दर्द को समाज के सामने अपनी लघुकथाओं के माध्यम से लाने का प्रयास किया है । आप झारखंड के धनबाद शहर से आते हैं।

जीवन भर उन्होंने कोयला खदान के बहाने मजदूर, शोषित, वंचितों के संघर्ष को बहुत नजदीक समझा और महसूस किया है। उन्होंने देखा है कि कैसे समय किसी के जीवन को कुछ वर्षों में ही काला कर देता है ।

अपनी लघुकथाओं के माध्यम से कृष्ण मनु ने हमेशा समाज को सचेत किया है, उसको परिष्कृत करने की कोशिश की है। कम शब्दों में और सटीक तथा साधी हुए भाषा तथा कथ्य को निष्कर्ष तक पहुंचाना ही एक लघुकथाकार का दायित्व होता है जिसमें कृष्ण मनु दक्ष हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक कान्ता रॉय द्वारा राजेश्वरी ऑफसेट प्रिंटिग प्रेस, शेड नं. 2, जोन 1, एम.पी.नगर,प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं मकान नम्बर-21, सेक्टर -सी सुभाष कॉलोनी,नियर हाई टेंशन लाइन गोविंदपुरा, भोपाल-462023 (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक : कान्ता रॉय E-mail:roy.kanta69@gmail.com Mob. 9575465147
DESIGN : JMD COMPUTERS, BHOPAL - 9981004661